Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 20

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

10 रमज़ान 1440 हिजरी कमरी 16 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 16 मई 2019 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

قُلِ اللّٰھُمَّ مٰلِکَ الۡمُلۡکِ تُؤۡتِی الۡمُلۡکَ مَنۡ تَشَآءُ
وَتَنۡزِعُ الۡمُلۡکَ مِمَّنۡ تَشَآءُ   وَتُعِزُّ مَنۡ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنۡ تَشَآءُ   بِیَدِکَ الۡخَیۡرُ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :27)

अनुवाद: तू कह दे हे मेरे अल्लाह! सलतनत के मालिक! जू जिसे चाहे शासन प्रदान करे और जिस से चाहे छीन लेता है। और तू जिसे चाहे सम्मान प्रदान करता है और जिसे चाहे अपमानित कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

हमारे हादी अकमल के सहाबा रज़ि ने अपने ख़ुदा और रसूल के लिए क्या क्या जान निसारयां कीं, वतन से निकाले गए,ज़ुलम उठाए,तरह तरह की मुसीबतें उठाईं, जानें दे दें लेकिन सिदक़ तथा वफ़ा के साथ क़दम मारते ही गए। अत: वह क्या बात थी कि जिसने उन्हें ऐसा जान कुरबान करने वाला बना दिया। वह सच्ची इलाही मुहब्बत का जोश था जिसकी किरणें उनके दिल में पड़ चुकी थी ,अत: चाहे किसी नबी के साथ मुक़ाबला कर लिया जाए आप की शिक्षा , नफ़्स को पवित्र करना ,अनुयायियों को दुनिया से दूर करा देना, बहादुरी के साथ सच्चाई के लिए ख़ून बहा देना। इस का उदाहरण कहीं ना मिल सकेगा। अत: यह स्थान हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि का है

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा रज़ि का मुक़ाम

जो सच्चाई तथा सफ़ाई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने या आप के सहाबा किराम रज़ि ने दिखाया उस का उदाहरण कहीं नहीं। जान देने तक पीछे न हटे। हज़रत ईसा अलैहिस्सालम को कोई मुश्किल काम ना था और ना मुफ़ीद ही कोई इलहाम था। कुछ बिरादरी के लोगों को समझाना कौन सा बड़ा काम है। यहूदी तौरात पढ़े ही हुए थे, ईमान लाने वाले थे। ख़ुदा को वहदहो ला शरीक जानते ही थे। तो कुछ वक़्त यह ख़्याल आ जाता है कि मसीह अलैहिस्सालम करने ही क्या आए थे। यहूदियों में तो तौहीद के लिए अब भी ग़ैरत पाई जाती है। बहुत अधिक यह कह सकते हैं कि शायद अख़लाक़ी कमज़ोरी थे लेकिन शिक्षा तो तौरेत में मौजूद ही थी। बावजूद इस सुविधा के कि क़ौम इस किताब को मानती थी मसीह अलैहिस्सालम ने वह किताब एक उस्ताद से अध्याय अध्याय पढ़ी थी। इस के मुक़ाबला पर हमारे सय्यद तथा मौला हादी कामिल अनपढ़ थे। उनका कोई उस्ताद भी ना था और यह एक ऐसी घटना है कि विरोधी भी इस बात से इनकार ना कर सके। अत: हज़रत ईसा अलैहिस्सालम के लिए दो आसानियां थीं। एक तो बिरादरी के लोग थे जो भारी बात मनवानी थी, वे पहले ही मान चुके थे। हाँ कुछ अख़लाक़ी कमज़ोरी थी लेकिन बावजूद इतनी सुविधा के हवारी ठीक ना हुए। लालची रहे। हज़रत ईसा अपने पास रुपया रखते थे। कुछ चोरियां भी करते। वह कहते हैं कि मुझे सिर रखने की जगह नहीं। लेकिन हम हैरान हैं कि इस के क्या अर्थ हैं। जब घर भी हो और मकान भी हो और माल में गुंजाइश इस क़दर हो कि चोरी की जाए तो पता भी ना लगे। ख़ैर यह तो एक बीच में वाक्य आ गया था। दिखाना यह उद्देश्य है कि बावजूद इन तमाम सविधाओं के कोई सुधार ना हो सका। पितरस को बहिश्त की कुंजियाँ तो मिल जाएं, लेकिन अपने उस्ताद को लानत देने से ना रुक सके।

अब मुक़ाबला में इन्साफ़ से देखा जाए कि हमारे हादी अक़मल के सहाबा रज़ि ने अपने ख़ुदा और रसूल के लिए क्या क्या जान निसारयां कीं, वतन से निकाले गए,ज़ुलम उठाए,तरह तरह की मुसीबतें उठाईं, जानें दे दीं लेकिन सिदक़ तथा वफ़ा के साथ क़दम मारते ही गए। अत: वह क्या बात थी कि जिस ने उन्हें ऐसा जान कुरबान करने वाला बना दिया। वह सच्ची इलाही मुहब्बत का जोश था जिसकी किरणें उनके दिल में पड़ चुकी थी ,अत: चाहे किसी नबी के साथ मुक़ाबला कर लिया जाए आप की शिक्षा , नफ़्स को पवित्र करना ,अनुयायियों को दुनिया से दूर करा देना, बहादुरी के साथ सच्चाई के लिए ख़ून बहा देना। इस का उदाहरण कहीं ना मिल सकेगा। अत: यह स्थान हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि का है उन में जो आपस में मुहब्बत थी उस का नक़्शा दो वाक्यों में बयान किया है

وَاَلَّفَ بَیۡنَ قُلُوۡبِہِمۡ ؕ   لَوۡ اَنۡفَقۡتَ مَا فِی الۡاَرۡضِ جَمِیۡعًا مَّاۤ اَلَّفۡتَ بَیۡنَ قُلُوۡبِہِمۡ وَلٰکِنَّ اللّٰہَ اَلَّفَ بَیۡنَہُمۡ

(अल्अनफ़ाल :64) अर्थात जो मुहब्बत उन में है वह हरगिज़ पैदा ना होती चाहे सोने का पहाड़ भी दिया जाता। अब एक और जमाअत मसीह मौऊद की है जिसने अपने अंदर सहाबा जैसा रंग पैदा करना है। सहाबा रज़ि की तो वह पवित्र जमाअत थी जिसकी प्रशंसा में क़ुरआन भरा पड़ा है। क्या आप लोग ऐसे हैं ?जब ख़ुदा कहता है कि मसीह अलैहिस्सलाम के साथ वे लोग होंगे जो सहाबा रज़ि के बराबर होंगे। सहाबा रज़ि तो वे थे जिन्होंने अपना माल ,अपना वतन सच्चाई की राह में दिया और सब कुछ छोड़ा। हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ी अल्लाह अन्हो का मामला अक्सर सुना होगा। एक बार जब ख़ुदा की राह में माल देने का हुक्म हुआ तो घर की सारी

शेष पृष्ठ 12 पर

125 वां जलसा सालाना कादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने 125वें जलसा सालाना कादियान के लिए 27,28 और 29 दिसंबर 2019 (दिनांक जुम्अ:,हफ़्ता और इतवार) की तारीख़ों की मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई है। जमाआत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसा में शामिल होने की नीयत कर के तैयारी शुरू कर दें। अल्लाह तआला हम सबको इस लिल्लाहि जलसा से फ़ैज़याब होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। जलसा सालाना की हर लिहाज़ से कामयाबी और बाबरकत होने इसी तरह नेक फितरत लोगों की हिदायत का कारण बनने के लिए दुआएं जारी रखें। जज़ाकमुल्लाह ।

(नाज़िर इस्लाह व इर्शाद मर्कज़िया कादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, सितम्बर 2018 ई (भाग-10)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद सय्यदुल क़ौमे ख़ादेमुहुम हमेशा अपने ज़हन में रखो और ख़िदमत करो और जमाअत अहमिदया से मंसूब होने की वजह से ज़्यादा बेहतर लीडर बनो और अपनी क़ौम की ख़िदमत करो।

हुज़ूर अनवर के हर एक शब्द में इतना सबक़ है कि इन्सान का दिल करता है कि वह ख़ुद कुछ ना बोले और हुज़ूर के उपदेशों को सुनता रहे। हुज़ूर अनवर ने यह जो फ़रमाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद सय्यदुल क़ौमे ख़ादेमुहम को कभी ना भूलना और इस को हमेशा पकड़े रखना, मेरी सारी ज़िन्दगी की शिक्षा एक तरफ़ और हुज़ूर अनवर का यह इरशाद एक तरफ़ जो सारी शिक्षा पर भारी है। अल्लाह तआला मुझे हुज़ूर अनवर के इरशाद पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

(मलिक साओटोमे के वज़ीर-ए-आज़म के अहमदी एडवाईज़र बराए पार्लीमैंटरी उमूर को हुज़ूर अनवर की ज़रीं नसाएह)

मर्दों के लिए विशेषकर यह हुक्म है कि वह जमाअत के साथ नमाज़ अदा करें, यह उन पर फ़र्ज़ है, इक़ामतुस्सलात का मतलब ही यह है कि नमाज़ क़ायम करना और जमाअत के साथ नमाज़ अदा करना , अतः इस मस्जिद की तामीर का हक़ तभी अदा होगा कि जब आप उस का हक़ अदा करेंगे और पांचों वक़्त उस को भरा रखेंगे।

इस मस्जिद की तामीर के बाद उस का हक़ तब अदा होगा जब इर्द-गिर्द के लोगोंको पता चलेगा कि यहां आने वाले मुसलमान, यहां इबादत करने वाले लोग हमारे लिए किसी मुश्किल का कारण नहीं बन रहे, बल्कि हमारे लिए आसानियां पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं।

अल्लाह करे कि आप अल्लाह तआला के हक़ अदा करने वाले हों, पांचों वक़्त यह मस्जिद खुली रहे और इस मस्जिद की आबादी भी बढ़े, आपस में प्यार तथा मुहब्बत भी पैदा हो और इर्दगिर्द के इलाक़ा में भी , शहर में भी, ग़ैरों में भी यह एहसास पैदा हो कि आप लोग उनका हक़ अदा करने वाले हैं, अमन और प्यार की फ़िज़ा क़ायम करने वाले हैं।

(मस्जिद बैयतुर्रहीम (आल्कन, बैल्जियम)के उद्घाटन के मौक़ा पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का ईमान वर्धक ख़िताब)

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मुल्क साओटोमे के प्रधानमन्त्री के एडवाइज़र की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद मुलक साओटोमे से आने वाले मेहमान Villuildiley Barocca साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य हासिल किया। महोदय अपने मुल्क में वज़ीर-ए-आज़म के एडवाइज़र बराए पार्लमैंटरी अफेयर्ज़ हैं और अल्लाह के फ़ज़ल से अहमदी हैं। महोदय ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि एक अहमदी होने की हैसियत से मैं किस तरह अपनी क़ौम की ख़िदमत करूँ।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इरशाद "सय्यदुल क़ौमे ख़ादेमुहुम" हमेशा अपने ज़हन में रखो और ख़िदमत करो और जमाअत अहमिदया से सम्बन्धित होने की वजह से अधिक बेहतर लीडर बनो और अपनी क़ौम की ख़िदमत करो।

महोदय को हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर बैअत का सौभाग्य भी प्रदान हुआ। उन्होंने इस बात का प्रकट करते हुए कहा कि आज मुझे यह सौभाग्य मिला है कि बैअत करते हुए हुज़ूर के मुबारक हाथ के नीचे मेरा हाथ था। यह मेरे लिए बड़ा भावनात्मक अवसर था। एक तरफ़ हुज़ूर अनवर का हाथ छूने की बड़ी सआदत थी तो दूसरी तरफ़ यह था कि मैं ख़ुदा तआला से एक वादा कर रहा था। मुझे महसूस हो रहा था कि मुझ में कोई चीज़ मर रही है। ऐसे लगता था जैसे एक छोटी सी मौत मेरे पर वारिद हुई है। यह कहते हुए महोदय रो पड़े।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के बारे में से अपने प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हुए कहा कि मैं कितना ख़ुशनसीब हूँ कि हुज़ूर ने मुझे वक़्त दिया और हुज़ूर अनवर के क़ुरब में मैंने वक़्त गुज़ारा जब कि मिलियनज़ की संख्या में लोग ऐसे हैं जो हुज़ूर अनवर को सिर्फ एक नज़र देखने के लिए तरसते हैं। वैसे तो मैं हुज़ूर अनवर को पहली बार मिल रहा था लेकिन हुज़ूर की मुहब्बत की वजह से ऐसा लगता था जैसे मैं कोई ग़ैर नहीं उनका अपना हूँ जो बड़े अरसा के बाद दोबारा मिला है और हुज़ूर इतनी मुहब्बत और विनम्रता से मिलते हैं कि दूसरे इन्सान के पास कोई चारा ही नहीं होता कि वह आपसे मुहब्बत ना करे।

हुज़ूर अनवर के हर एक शब्द में इतना सबक़ है कि इन्सान का दिल करता है कि वह ख़ुद कुछ ना बोले और हुज़ूर के उपदेशों को सुनता रहे। हुज़ूर अनवर ने सबसे पहले मुझ से पूछा कि क्या आप साओटोमे के प्राइम मिनिस्टर हैं? इस पर मैंने निवेदन किया कि नहीं। मैं प्राइम मिनिस्टर का एडवाइज़र हूँ। इस पर हुज़ूर ने दया करते हुए फ़रमाया फिर भविष्य के प्राइम मिनिस्टर हो। मैं ने इस पोज़ीशन के बारे में इस से पहले कभी ना सोचा था। इस से ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर की मुझ से बहुत आशाए हैं जिन पर पूरा उतरने के लिए मुझे बहुत कोशिश करनी पड़ेगी।

हुज़ूर अनवर ने यह जो फ़रमाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद "सय्यदुल क़ौमे ख़ादेमुहम" को कभी ना भूलना और इस को हमेशा पकड़े रखना, मेरी सारी ज़िन्दगी की शिक्षा एक तरफ़ और हुज़ूर अनवर का यह इरशाद एक तरफ़ जो सारी शिक्षा पर भारी है। अल्लाह तआला मुझे हुज़ूर अनवर के इरशाद पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

फ़ैमिली मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में जर्मनी की विभिन्न 27 जमाअतों से 47 फ़ैमिलीज़ के 163 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इस के इलावा में निम्नलिखित ग्यारह देशों से आने वाले 14 दोस्त ने भी अपनी प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। लाटवीअ , क़तर, पाकिस्तान, नार्वे, गेमबिया, इंडिया, माली, गाना, कैमरोन, दुबई और एस्टोनिया।

जामिआ अहमिदया जर्मनी के इस साल के छात्रों ने विभिन्न रुख़स्तों के दिनों में लंदन आकर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाते रहे जामिआ अहमिदया के पच्चीस छात्र ऐसे थे जो अपने इमीग्रेशन स्टेटस की वजह से लंदन का सफ़र नहीं कर सकते थे। आज ऐसे इन पच्चीस छात्रों ने भी प्यारे आक़ा की मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

आज मुलाक़ात करने वाले सब दोस्त और फ़ैमिलीज़ ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

शहीद जो है वो फिर अल्लाह तआला के पास जाता है और वहां आज़ाद फिरता है।

हज़रत मुबश्शिर बिन अब्द अलमुन्ज़िर रज़ि ..ने बताया कि मैं जन्नत में हूँ। हम जहां चाहते हैं जन्नत में खाते पीते हैं। मैंने उनसे कहा कि क्या आप बदर में शहीद नहीं हो गए थे? आप ने बताया हाँ क्यों नहीं। लेकिन मुझे फिर ज़िन्दा कर दिया गया था। इस सहाबी ने यह ख़्वाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाई तो रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हे अबी जाबिर! शहादत यही होती है।

जंगों और दुश्मनों के तंग करने के बावजूद सहाबा अपनी तफ़रीह के सामान भी करते रहते थे। एक दूसरे को हल्के फुल्के चैलेंज भी देते थे ताकि वक़्त भी गुज़र जाए और दुश्मनों का जो स्थायी ज़हनी दबाव भी है वह भी कुछ कम हो। आप को क़त्ल तथा फित्ना से उद्देश्य नहीं थी।

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात मुर्ति बदरी असहाबे रसूल हज़रत हुसैन बिन हारिस, हज़रत सफ़्वान, हज़रत मुबश्शिर बिन अब्द अलमुन्ज़िर, हज़रत वर्क़ा बिन म्यूस, हज़रत मुहरिज़ बिन नज़्लह, हज़रत सुवैयबित बिन सअद, रज़ी अल्लाह अन्हुम व रज़ू अन्हुम की सीरते मुबारका का दिलनशीन तज़किरा।

अल्लाह तआला जब अपने अंबिया को इल्हाम के द्वारा कोई हुक्म देता है कि यह करो तो इस का यह मतलब होता है कि अल्लाह तआला उस के लिए अपनी ताईदात और सहायता भी फ़रमाएगा और वसीले के सामान भी पैदा फ़रमाएगा और फिर इस तरह यह पूर्णता को पहुँचेगा और यही हमारा तजुर्बा है।

हर क़दम जो हमारा आगे बढ़ता है या जो तरक़्क़ी हम देखते हैं वह असल में अल्लाह तआला के इस मंसूबे का हिस्सा है जो अल्लाह तआला ने इस्लाम को दुनिया में फैलाने के लिए बनाया हुआ है।

मुझे यक़ीन है और कुछ दूसरी गवाहियां भी ज़ाहिर करती हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहिमहुल्लाह का यहां (इस्लामाबाद में) बाक़ायदा मर्कज़ बनाने का इरादा था।

अल्लाह तआला इस्लामाबाद से इस्लाम की तब्लीग़ के काम को पहले से ज़्यादा वुसअत प्रदान फ़रमाए और "वस्सिअ् मकअनक" सिर्फ़ मकानियत की वुसअत का माध्यम ही ना हो बल्कि अल्लाह तआला के मन्सूबों की तकमील में वुसअत का माध्यम भी बने।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि अलसलोत्न वस्सलाम के इलहाम "वस्सिअ् मकानक" के अधीन जमाअत अहमदिया के नए मर्कज़ इस्लामाबाद, टेलफ़ोरड, सर्रे की तामीर और वहां मुंतकली का ऐलान। इसी तरह इस्लामाबाद की नई तामीर के मंसूबे और वहां मरकज़ अहमदीयत के मुंतक़िल होने के हर लिहाज़ से बरकतों वाला होने के लिए जमाअत के लोगों को दुआ की तहरीक।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 अप्रैल 2019 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज जिन बदरी सहाबा का मैं ज़िक्र करूँगा उन में से पहला नाम है हज़रत हुसैन बिन हारिस रज़ि का। हज़रत हुसैन की माता सुख़ैलह बिन्त ख़ुज़ाई थीं। उनका सम्बन्ध बनू मुत्तलिब बिन अबदे मनाफ़ से था उन्होंने अपने दो भाईयों हज़रत तुफ़ैल और हज़रत उबैदा के साथ मदीना की तरफ़ हिजरत की। उनके साथ हज़रत मिसतह बिन उसासह रज़ि और हज़रत अबाद बिन मुत्तलिब रज़ि भी थे। मदीना में आप ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमह अज़्लानी रज़ि के घर निवास किया। रिवायत के अनुसार आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हुसैन रज़ि की हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि के साथ भाईचारा स्थापित फ़रमाया। यह मुहम्मद बिन इस्हाक़ के अनुसार है। हज़रत हुसैन रज़ि ने जंग बदर और उहद सहित सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शिरकत की। हज़रत हुसैन रज़ि के दो भाईयों हज़रत उबैदह रज़ि और हज़रत तुफैल रज़ि ने भी जंग बदर में शिरकत की। हज़रत हुसैन रज़ि की वफ़ात 32 हिज्री में हुई।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 30 हुसैन बिन अलहारिस दारुल अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लेबनान 1996 ई)

(अल्इस्तेयाब भाग 3 पृष्ठ 141 उबैदह बिन अलहारिस दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लेबनान 2002 ई)

(असदुल गाब: भाग अव्वल पृष्ठ 573 हुसैन अल्हारिस प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

हज़रत हुसैन रज़ि के बेटे का नाम अब्दुल्लाह था। उनकी बेटियां ख़दीजा और हिन्द थीं। उन्होंने भी इस्लाम क़बूल किया। जंग ख़ैबर के वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दोनों को सौ वसक़ अन्न प्रदान फ़रमाया।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 30 ज़िक्र अलहुसैन बिन अल्हारिस भाग 8 पृष्ठ 364 तसमी तुन्निसा अल्मुबायात मिन क़ुरैश प्रकाशन दारुल अहया अत्तुरास

अल्अरबी बेरूत 1996 ई)

एक वसक़ जो है वो 60 साअ होते हैं और एक साअ कुछ कम अढ़ाई सैर के बराबर होता है तो इस तरह तक़रीबन 375 मन अन्न आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको उनके पिता की वजह से प्रदान फ़रमाया।

(लुग़ातुल हदीस भाग 4 पृष्ठ 487 वसक़ भाग 2 पृष्ठ 648 साअ प्रकाशक नुअमानी कुतुब ख़ाना लाहौर 2005 ई)

हज़रत सफ़्वान रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जिनके पिता का नाम वह्ब बिन रबीआ था। यह दूसरे सहाबी हैं जिनका ज़िक्र करूँगा। हज़रत सफवान रज़ि की कुनिय्यत अबू अम्रो है और आप क़बीला बनू हारिस बिन फ़िह्र से सम्बन्ध रखते थे। आप के पिता का नाम वह्ब बन रबीअह था। उनका नाम एक रिवायत में अहुय्ब भी आया है। उनकी माता का नाम दअ्द बिन्तई जह्दम था जो कि बैज़ा के नाम से मशहूर थीं। इसी वजह से हज़रत सफवान रज़ि को इब्न बैज़ा भी कहा जाता है। आप हज़रत सह्ल रज़ि और हज़रत सुहैल रज़ि के भाई थे। ये दोनों भाई उन सह्ल रज़ि और सुहैल रड़ि के इलावा हैं जिन से नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद नबवी की ज़मीन ख़रीदी थी। ये वे नहीं हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सफवान रज़ि का भाईचारा हज़रत राफ़िअ बिन मुअल्ला रज़ि से करवाया और एक रिवायत के अनुसार आपका भाईचारा हज़रत राफ़िअ् बिन अज़्लअन रज़ि से करवाया गई। उनकी वफ़ात के बारे में भी मतभेद हैं। कुछ कहते हैं कि हज़रत सफवान रज़ि को जंग बदर में तुअय्मह बिन अदी ने शहीद किया था और एक रिवायत के अनुसार आप जंग बदर में शहीद नहीं हुए थे बल्कि आप ने जंग बदर सहित सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शिरकत की। हज़रत सफवान रज़ि के बारे में एक रिवायत में आता है कि आप जंग बदर के बाद मक्का वापस लौट गए थे और कुछ समय बाद दोबारा हिजरत कर के आ गए थे। यह भी रिवायत मिलती है कि आप फ़तह मक्का तक वहीं रहे अर्थात मक्का में रहे। हज़रत इब्न अब्बास रज़ि रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें सरिया अब्दुल्लाह बिन जह्श में अब्वा की तरफ़ शामिल कर के भिजवाया था। कुछ रिवायतों में आपकी वफ़ात का साल 18 हिज्री और 30 हिज्री और 38 हिज्री वर्णन किया गया है।

(असदुल गाब: भाग 3 पृष्ठ 33 सफ़्वान बिन वह्ब प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

(अलासाबा फ़ी तमीईज़ अलसहाबा भाग 3 पृष्ठ 358-359 सफ़्वान बिन वह्ब प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1995ई)

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 318 सफ़्वान इब्न बैज़ाई प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

बहरहाल ये हर जगह पर प्रमाणित है कि आप बदरी सहाबी थे।

अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है वह हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि हैं। हज़रत मुबश्शिर रज़ि की माता का नाम नसीबह बिन्त ज़ैद था। आप ओस के क़बीले बनू अम्रो बिन औफ़ से थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि और हज़रत आकिल बिन अबू बुकैर रज़ि के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया था। कुछ कहते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत आकिल बिन अबू बुकैर रज़ि अल्लाह तआला अन्हो और हज़रत मुजज़्ज़र बिन ज़ैद रज़ि के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया था। बहरहाल आप जंग बदर में सम्मिलित हुए और इसी जंग में आप शहीद भी हुए। हज़रत साइब बिन अबुल बाबह: रज़ि जो हज़रत मुबश्शिर रज़ि के भाई हज़रत अबुल बाबह:रज़ि के बेटे थे उनसे रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि का माले ग़नीमत में हिस्सा मुक़र्रर फ़रमाया और मअ्न बिन अदी रज़ि हमारे पास उनका हिस्सा लेकर आए।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 347-348 मुबश्शिर बिन अब्दुल मुनज़िर, दारुल अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लेबनान 1990 ई)

उनके भाई, उनके भतीजों को भी हिस्सा मिला।

हजरत मदीना के वक़्त मुहाजरीन में से हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़ि और हज़रत आमिर बिन रबीअह रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जह्श रज़ि और उनके भाई हज़रत अबू अह्मद बिन जह्श रज़ि ने क़बा के स्थान पर हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि के यहाँ निवास किया। फिर मुहाजरीन एक के बाद एक वहां आने लगे।

(अस्सीरतुल हलबिया ले इब्न हिशाम पृष्ठ 335, ज़िक्र, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001)

हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि अपने दो भाईयों हज़रत अबू लुबाबह बिन अब्दुल मुनज़िर रज़ि और हज़रत रिफ़ा बिन अब्दुल मुनज़िर रज़ि के साथ जंग बदर में सम्मिलित हुए थे। हज़रत रिफ़ा रज़ि सत्तर अन्सार के साथ बैअत उक़बा में शामिल हुए थे। इसी तरह जंग बदर और जंग उहद में भी सम्मिलित हुए थे। जंग उहद के दिन आप शहीद हुए। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग बदर की तरफ रवाना हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबुल बाबह: रज़ि को मदीने का आमिल बना कर रौहआ स्थान से वापस रवाना किया जैसा कि पहले भी ज़िक्र हो चुका है कि रौहा एक स्थान का नाम है। मदीना से चालीस मील की दूरी पर है। लेकिन आँहज़रत सल्लल्ला हो अलैहि वसल्लम ने आप के लिए माले ग़नीमत और सवाब में हिस्सा मुक़र्रर फ़रमाया। अल्लामा इब्न इसहाक़ वर्णन करते हैं कि हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुनज़िर रज़ि बनू अमरो बिन औफ़ से थे। आप इन अन्सारी सहाबा में से थे जो बदर में शहीद हुए थे।

(असदुल गाब: फ़ी मार्फतिस्सहाबा, भाग 5,मुबश्शिर बिन अब्दुल मुनज़िर ,पृष्ठ 53,दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लेबनान 2008) (अत्तबकातुल कुबरा,भाग 3 ,पृष्ठ241,मुबश्शिर बिन अबदि अलमुनज़िर, दारुल अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लेबनान 1996 ई) (लुगातुल हदीस भाग 2 पृष्ठ 149)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्रो बन हराम रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने जंग उहद से पहले ख़्वाब देखा कि मानो हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ि मुझे कह रहे हैं कि तुम कुछ रोज़ में हमारे पास आ जाओगे। मैंने पूछा कि आप कहाँ हैं तो उन्होंने बताया कि मैं जन्नत में हूँ। हम जहां चाहते हैं जन्नत में खाते पीते हैं। मैंने उनसे कहा कि क्या आप जंग बदर में शहीद नहीं हो गए थे? आप ने बताया हाँ क्यों नहीं। लेकिन मुझे फिर ज़िंदा कर दिया गया था। इस सहाबी ने यह ख़्वाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सुनाया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हे अबू जाबिर! शहादत यही होती है।

(अल्मुसतदरक अलस्सहीहैन भाग 5 पृष्ठ 1840,1841,किताब मारफतुस्सहाब: ज़िक्र मनाकिब अब्दुल्लाह बिन अमरो प्रकाशन नज़ार मुस्तफ़ा अल्बाज़ ,मक्का 2000 ई)

शहीद जो है वह फिर अल्लाह तआला के पास जाता है और वहां आज़ाद फिरता है।

अल्लामा ज़र्क़ानी जंग बदर के मौक़ा पर शहीद होने वाले सहाबा का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि दो सहाबा क़बीला ओस में से थे जिन में से एक हज़रत सअद बिन ख़ैसमह रज़ि थे। कुछ कहते हैं कि तुऐमह बिन अदी ने उन्हें शहीद किया जबकि कुछ कहते हैं कि अम्रो बिन अब्दे वुद्द ने उन्हें शहीद किया था। समहूदी ने अपनी किताब वफ़ा में लिखा है कि अहल सैर के कलाम से ज़ाहिर है अर्थात जो सीरत लिखते हैं कि जंग बदर के मौक़ा पर शहीद होने वाले सहाबा सिवाए हज़रत उबैदह रज़ि के बदर में मदफ़ून हैं। हज़रत उबैदह रज़ि की वफ़ात कुछ देर बाद हुई थी और वह सफ़रा या रोहा के स्थान पर मदफ़ून हैं।

तिबरानी ने सिका (मज़बूत) रावियों से रिवायत की है कि हज़रत इब्न मसूद रज़ि रिवायत करते हैं कि यक़ीनन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वे अस्हाब जो बदर के दिन शहीद किए गए अल्लाह उनकी रूहों को जन्नत में हरे परिंदों में रखेगा जो जन्नत में खाईं पिएंगे। वे इसी हाल में होंगे कि उनका रब अचानक उन पर प्रकट होगा, ज़ाहिर होगा और कहेगा हे मेरे बंदो ! तुम क्या चाहते हो? अत: वे कहेंगे हे हमारे रब! क्या इस से ऊपर भी कोई चीज़ है। जन्नत में हम आए हुए हैं। अल्लाह तआला फिर पूछेगा तुम क्या चाहते हो? अत: चौथी बार सहाबा कहेंगे कि तो हमारी रूहों को हमारे जिस्मों में वापस लौटा दे ताकि हम फिर से वैसे ही शहीद किए जाएं जैसे हम पहले शहीद किए गए थे।

(शरह अल्अल्लामा अज़्ज़रकानी ,भाग 2 ,पृष्ठ 327,बाब जंग बदर अल्कुबरा ,प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लेबनान 1996 ई)

फिर अगले सहाबी जिनका ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत वर्क़ा बिन इयास रज़ि । हज़रत वर्क़ा रज़ि के नाम में मतभेद पाया जाता है। आप का नाम वर्क़ा के अतिरिक्त वदुफ़ह और वदुकह भी वर्णन हुआ है। हज़रत वर्क़ा रज़ि के पिता का नाम इयास बिन अमरो था। आप अन्सार के क़बीले ख़ज़रज की शाख़ बनू लौज़ान बिन ग़नम से सम्बन्ध रखते थे। अल्लामा इब्ने इसहाक़ की रिवायत के अनुसार हज़रत वर्क़ा रज़ि को अपने दो भाईयों हज़रत रबीअ और हज़रत अमरो के साथ जंग बदर में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली थी। हज़रत वर्क़ा रज़ि को जंग बदर के इलावा जंग उहद, जंग

ख़ंदक़ और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ अन्य सभी जंगों में शिरकत की तौफ़ीक़ मिली। आप की शहादत जंग यमामा के दिन हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्ना के अहदे ख़िलाफ़त में 11हिज्री में हुई।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 469 दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2001ई)(असदुल ग़ाब: भाग 5 पृष्ठ 412-413 वदफ़: बिन ईयास, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2008 ई)

(अल्असाबा फ़ी तमीईज़ अलस्सहाबा भाग 6 पृष्ठ 471 , वदक़: बिन ईयास बिन अमरो अल्अनसारी, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2005ई)

अगले जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत मुहरिज़ बिन नज़लह रज़ि। उनके पिता का नाम नज़ल: बिन अब्दुल्लाह है जबकि दूसरे कथन के अनुसार आपके पिता का नाम वहब था। आप की कुनिय्यत अबू नज़ल: थी। आप गोरे और ख़ूबसूरत चेहरे वाले थे। आप का लक़ब फ़ुहरै: था। आप अख़रम के नाम से भी जाने जाते थे। आप बनू अबद शम्स के हलीफ़ थे जब कि बनू अब्दुल अशहल इन्हें अपना हलीफ़ बताते हैं। मुहरिज़ या अख़रम दोनों नाम आप के हैं। हज़रत मुहरिज़ रज़ि का सम्बन्ध मक्का के क़बीला बनू ग़नम बिन वुदवान से था। यह क़बीला मुसलमान हो गया था। इस क़बीले के मर्दों और औरतों को मदीना की तरफ़ हिजरत की तौफ़ीक़ मिली। इन मुहाजरीन में हज़रत मुहरिज़ बिन नज़लह रज़ि भी शामिल थे। वाक़दी कहते हैं कि मैंने इब्राहीम बिन इस्माईल को सुना वह कहते थे कि यौमुस्सरह ,ये जंग ज़ी कुर्द और ग़ज़व: अलग़ाबह का नाम है जो 6 हिज्री में हुई थी,मैं सिवाए हज़रत मुहरिज़ बिन नज़लह रज़ि के बनू अब्दुल अशहल के घर से कोई और नहीं निकला। वह हज़रत मुहम्मद बिन मसलमह रज़ि के घोड़े पर सवार थे जिसका नाम ज़ूल्लमह: था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुहरिज़ बिन नज़लह रज़ि और हज़रत उमरो बिन हज़म रज़ि के बीच इभाईचारा स्थापित फ़रमाया था। वाक़दी के नज़दीक आप जंग बदर, जंग उहद और जंग ख़ंदक़ में सम्मिलित हुए थे। सालिह बिन कैसान से रिवायत है कि हज़रत मुहरिज़ बिन नज़लह रज़ि ने बताया कि मैंने ख़्वाब में दूसरे आसमान को देखा कि वह मेरे लिए खोल दिया गया है यहां तक कि मैं उस में दाख़िल हो गया और सातवें आसमान तक पहुंच गया। चला गया। मुझ से कहा गया कि यह तुम्हारी मंज़िल है। हज़रत मुहरिज़ रज़ि कहते हैं कि मैंने हज़रत अबूबकर सदीक़ रज़ि के सामने यह ख़्वाब वर्णन किया जो ताबीर के फ़न के माहिर थे तो आप ने फ़रमाया कि शहादत की ख़ुशख़बरी हो! फिर एक रोज़ आप शहीद कर दिए गए। आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि के साथ यौम अलस्सरह में ग़ज़व: अलग़ाबह के लिए रवाना हुए, ये जंग ज़ी कुर्द भी कहलाती थी जो 6 हिज्री में हुआ। अमरो बिन उसमान जहशी अपने बाप दादा से रिवायत करते हैं कि हज़रत मुहरिज़ बिन नज़लह रज़ि जब जंग बदर में शामिल हुए तो आप 31 या 32 साल के थे और जब आप शहीद हुए तो 37 या 38 साल के क़रीब थे।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3,पृष्ठ 52 मुहरिज़ बिन नज़लत दारुल अहया अत्तुरास ,बेरूत 1996 ई) (असदुल ग़ाब: फ़ी मारफ़: अलसहाब:,भाग 5, पृष्ठ 68 मुहरिज़ बिन नज़ल: दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2008 ई)

हज़रत मुहरिज़ रज़ि की शहादत की घटना इस तरह वर्णन हुई है। हज़रत अयास बिन सलमह रज़ि जंग ज़ी कुर्द के बारे में रिवायत वर्णन करते हैं कि मेरे पिता ने मुझ से वर्णन किया कि सुलह हुदैबिया वाली घटना के बाद हम मदीना की तरफ़ वापस जाने के लिए निकले। फिर हम एक जगह उतरे। हमारे और बनू लिहयान के बीच एक पहाड़ था। वे मुशरिक थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस आदमी के लिए दुआ की जो इस पहाड़ पर रात को चढ़े मानो वह नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा के लिए हालात पर नज़र रखने और हिफ़ाज़त के उद्देश्य से जासूस का काम दे अर्थात निगरानी के लिए, हिफ़ाज़त के लिए ऊपर चढ़े। देखे कि कोई दुश्मन इत्यादि हमला न कर रहा हो। हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ि कहते हैं मैं इस रात दो या तीन बार चढ़ा । फिर हम मदीना पहुंचे। फिर कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रबाह नामक आदमी के हाथ अपने ऊंट भेजे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम था और मैं हज़रत तलहा रज़ि के घोड़े के साथ इस पर सवार हो कर निकला और मैं इस को ऊंटों के साथ पानी पिलाने के लिए जा रहा था। जब सुबह हुई तो अबदुर्रहमान फ़ज़ारी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊंटों पर हमला किया। साथ एक क़बीला था जो दुश्मन था और सबको हाँक कर ले गया और उनके चरवाहे को क़त्ल कर दिया। रावी कहते हैं कि मैंने कहा हे रबाह! ये घोड़ा पकड़ो और उसे तलह बिन उबैदुल्लाह को पहुंचा दो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दो कि मुशरिकों ने आपके जानवर लूट लिए हैं। फिर में एक टीले पर मदीने की तरफ़ मुँह कर के खड़ा हुआ और तीन बार पुकारा يَاصَبَاحَاهُ!يَاصَبَاحَاه।यह बात अरब वाले उस वक़्त कहा करते थे जब कोई दुश्मन लूटने वाला और ग़ारत करने वाला सुबह को आ पहुंचता था तो उस के साथ यह नारा मारते थे मानो बुलंद आवाज़ से फ़र्याद मांगी जा रही है और सहायता के लिए ऐलान किया जा रहा है ताकि हिमायती जो हैं वे फ़ौरन आ जाएं और दुश्मन का मुक़ाबला करें और इस को दौड़ा दें।

कुछ ने कहा है कि लड़ने वालों का क़ायदा होता था कि रात होते ही जंग बंद कर देते थे। अपने ठिकानों पर चले जाते थे। सबाहहु के बारे में दूसरी रिवायत यह भी है। और फिर सबाहहु कहा कर दूसरे रोज़ लड़ने वालों को आगाह किया जाता था कि सुबह हो गई है। अब जंग के लिए फिर तैयार हो जाओ। लुगातुल हदीस में यह वज़ाहत लिखी गई है। बहरहाल कहते हैं कि फिर मैं उन लोगों के पीछे तलाश करता हुआ और उन्हें तीर मारता हुआ निकला और मैं रज़ज़ीह अशआर पढ़ रहा था और मैं कह रहा कि

اَنَا ابْنُ الْاَكْوَع وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّع

कि मैं अकवा का बेटा हूँ और ये दिन कमीनों की तबाही का दिन है। अत: मैं उनमें से जिस आदमी से भी मिलता तो उस के कुजावे में तीर मारता यहां तक कि तीर का फल निकल कर उस के कंधे तक जा पहुंचता। मैं कहता اَنَا ابْنُ الْاَكْوَع وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّع मैं अकवा का बेटा हूँ और ये दिन कमीनों की तबाही का दिन है। कहते हैं कि अल्लाह की क़सम! मैं उनको तीर मारता रहा और उन्हें ज़ख़्मी करता रहा और जब मेरी तरफ़ कोई घुड़सवार आता तो मैं किसी दरख़्त की तरफ़ आता और इस के नीचे बैठ जाता अर्थात दरख़्त के पीछे छुप जाता और मैं उसे तीर मार कर ज़ख़मी कर देता यहां तक कि जब पहाड़ का रास्ता तंग हो गया और वे इस तंग रास्ते में दाख़िल हुए तो मैं पहाड़ पर चढ़ गया और उन्हें पत्थर मारने लगा। ये लोग जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जानवर लूट कर लेकर जा रहे थे उन पर उन्होंने हमला किया। अकेले थे। पहले तीर मारते रहे फिर कहते हैं कि दर्रे पर पहुंचा वहां से पत्थर मारने शुरू किए और इसी तरह में उनका पीछा करता रहा यहां तक कि अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊंटों में से कोई ऊंट ऐसा पैदा नहीं किया जिसे मैंने अपने पीछे ना छोड़ दिया हो अर्थात कि दर्रे की वजह से वे पीछे रह गए और वे लोग आगे दौड़ गए और उन्होंने उनको मेरे और अपने बीच छोड़ दिया। फिर मैं तीर-अंदाज़ी करता रहा यहां तक कि उन्होंने तीस से ज़्यादा चादरें और तीस नेज़े अर्थात अपना वज़न हल्का होने के लिए फेंक दिए। वे लोग दौड़ रहे थे तो ऊंट छोड़ दिए। फिर अपना सामान भी पीछे फेंकना शुरू कर दिया ताकि आसानी से दौड़ सकें। कहते हैं जो चीज़ भी वो फेंकते जाते थे में उन पर निशान के तौर पर पत्थर रख देता था ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा पहचान लें यहां तक कि वे एक तंग घाटी में आए जहां उन्हें बदर फ़ज़ारी का कोई बेटा मिला। वे बैठ कर खाना खाने लगे और मैं एक चोटी पर बैठा था। फ़ज़ारी ने कहा ये कौन आदमी है जिसे मैं देख रहा हूँ? उन्होंने कहा इस आदमी ने तो हमें तंग कर रखा है। अल्लाह की क़सम! ये सुबह से हम पर निरन्तर तीर-अंदाज़ी कर रहा है यहां तक कि उसने हम से सब कुछ छीन लिया है। उसने कहा चाहिए कि तुम में से चार आदमी उस की तरफ़ जाएं। हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ि कहते हैं कि उनमें से चार आदमी मेरी तरफ़ पहाड़ पर चढ़े। जब वे मेरे इतने क़रीब आए कि मैं उनसे बात कर सका तो मैंने कहा कि तुम मुझे जानते हो? उन्होंने कहा नहीं। तुम कौन हो? मैंने कहा कि मैं सलमा बिन अकवा हूँ। फिर उन्होंने आगे काफ़िरों को कहा कि उस की क़सम जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे को इज़्ज़त प्रदान की है कि मैं तुम में से जिस आदमी को पकड़ना चाहूँ उसे पकड़ सकता हूँ लेकिन तुम में से कोई आदमी मुझे पकड़ना चाहे तो नहीं पकड़ सकता। चार आदमी जो आए थे उन में से एक ज़रा डर गया। उसने कहा कि मेरा भी यही ख़्याल है और वे चारों फिर वापस चले गए और मैं अपनी जगह पर बैठा रहा यहां तक कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घोड़े दरख़्तों के बीच आते हुए देखे। उन में से सबसे पहले अख़रम असदी रज़ि थे और उनके पीछे अबू क़तादः अन्सारी रज़ि थे और उनके पीछे मिक़दअद बन असवद किन्दी रज़ि थे मैंने अख़रम अर्थात हज़रत मुहरिज़ रज़ि के घोड़े की लगाम पकड़ी तो वे चारों तरफ़ पीठ फेर कर भाग गए। यह ज़रा सा confusion

है मेरा ख़्याल है। वे जो दूसरे लोग वहां बैठे खाना खा रहे थे जब उन्होंने देखा कि ये लोग और क़रीब आ गए हैं तो वे लोग पीठ फेर कर भाग गए। कहते हैं मैंने कहा हे अख़रम! अर्थात हज़रत मुहरिज़ रज़ि को कहा कि तो उनसे बच ,ताकि वे तुझे हलाक ना कर दें यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा पहुंच ना जाएं। उसने कहा हे सलमा!अगर तू अल्लाह और आख़रत के दिन पर पर ईमान रखता है और तू जानता है कि जन्नत हक़ है और आग हक़ है अर्थात जहन्नुम हक़ है। अत: तू मेरे और शहादत के बीच रोक ना हो। मैंने उसे छोड़ दिया यहां तक कि वे अर्थात अख़रम रज़ि और अबदुर्ररहमान आपस में गुछ गए और उन्होंने अबदुर्ररहमान सहित उस के घोड़े को ज़ख़्मी कर दिया और अबदुर्ररहमान ने इन को अर्थात अख़रम रज़ि को, हज़रत मुहरिज़ रज़ि को नेज़ा मार कर शहीद कर दिया और उनके घोड़े पर सवार हो कर अपने लोगों में जाने के लिए वापस मुड़ा तो फिर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ लोग आ रहे थे उनमें से अबू क़तादह रज़ि , अबदुर्ररहमान के पीछे गए और इस को पकड़ लिया और नेज़ा मार कर उसे क़त्ल कर दिया जो हज़रत मुहरिज़ रज़ि को शहीद कर के गया था। तो यह कहते हैं कि उस की क़सम जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे को इज़्ज़त प्रदान की! मैंने दौड़ते हुए उनका पीछा जारी रखा। मै ंफिर भी उनके पीछे जाता रहा यहां तक कि मैंने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा में से किसी को और ना उनके ग़ुबार को अपने पीछे पाया अर्थात बहुत आगे निकल गया यहां तक कि वे सूरज डूबने से पहले एक घाटी में पहुंचे जहां पानी था। उसे ज़ी कुर्द कहते थे। वे लोग जो माल लूट के ले जानेवाले चोर थे वे इस से पानी पीना चाहते थे और वे प्यासे थे। फिर उन्होंने मुझे अपने पीछे दौड़ते हुए देखा। मैंने उनको वहां से हटा दिया और वे इस में से एक क़तरा भी ना पी सके। वे वहां से निकले और एक घाटी की तरफ़ तेज़ी से बढ़े। मैं भी दौड़ा। मैं उनमें से जिस आदमी को पीछे पाता अर्थात छुप-छुप के पीछे दौड़ता रहा और जो पीछे रह जाता था उस के कंधे की हड्डी में तीर मारता। मैं कहता

اَنَا ابْنُ الْاَكْوَع وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّع

में अकवा का बेटा हूँ और ये दिन कमीनों की तबाही का दिन है। कहते हैं कि उसने कहा कि अकवा को इस की माँ खोए। क्या सुबह वाला अकवा ? ये जो लोगों को ज़ख़मी कर रहे थे तो उनमें से एक ने यह कहा कि सुबह वाला अकवा , जो सुबह से हमारे पीछे पड़ा हुआ है? मैंने कहा हाँ। हे अपनी जान के दुश्मन तेरा सुबह वाला अकवा । उन्होंने दो घोड़े घाटी में पीछे छोड़ दिए। मैं इन दोनों को हांकते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास चल पड़ा। मुझे आमिर एक छागल में थोड़े से दूध में मिला हुआ पानी और एक छागल में पानी लाते हुए मिले। फिर मैंने वुज़ू किया और पिया। फिर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस पानी पर थे जहां से मैंने उन लोगों को , इन लुटेरों को सुबह भगाया था। वहां आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस पानी के क़रीब पहुंच चुके थे। मैंने देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वे ऊंट और वे सब चीज़ें जो मैंने मुशरिकों से छुड़ाई थीं ले लें और हज़रत बिलाल रज़ि ने इन ऊंटों में से जो मैंने उनसे छीने थे एक ऊंटनी ज़िबह की। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए कलेजी और कोहान के गोश्त से भून रहे थे। मैंने कहा हे रसूलुल्लाह! आप के साथ जो लोग आए हैं मुझे इस लश्कर में से सौ आदमी चुनने की इजाज़त प्रदान फ़रमाएं। तो मैं इन लोगों का पीछा कर के इन सबको क़तल कर दूं। कोई उनके क़बीले को ख़बर देने वाला भी ना बचे जो ये सामान लूट कर लौटे थे, लूट कर ले जाने लगे थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खिलखिला कर हँसे यहां तक कि आग की रोशनी में आप के दाँत मुबारक दिखाई देने लगे। आप ने फ़रमाया हे सलमा! क्या तुम समझते हो कि तुम यह कर सकते हो कि उनके घरों में पहुंचने से पहले इन सबको मार दो? मैंने कहा हाँ उस की क़सम जिसने आप को इज़्ज़त प्रदान की है ! आप ने फ़रमाया अब वे ग़त्फ़ान की सरहद पर पहुंच गए हैं।

एक दूसरी रिवायत में है कि इस जगह ये शब्द वर्णन हुए हैं कि जब हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुश्रेकीन का दोबारा पीछा करने की इजाज़त मांगी तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। यह

اَنَا ابْنُ الْاَكْوَع وَالْيَوْمُ يَوْمُ الرُّضَّع

हे इब्न अकवा ! तुमने जब ग़लबा पा लिया है तो फिर जाने दो और क्षमा से काम लो। अब पीछे जाने का उनको क़त्ल करने का क्या फ़ायदा? । तो यह जो उस्वा है इस में एक तो यह है कि यह अकेले जंग करते रहे हज़रत मुहरिज़ रज़ि आए तो उन पर उन्होंने छुप के हमला किया या उनको किसी तरह शहीद कर दिया। पहली बार तो उनके घोड़े को पकड़ के उन्होंने पल्टा दिया और बच गए लेकिन फिर हमला हुआ और वह शहीद हो गए। एक तो यह हज़रत मुहरिज़ रज़ि की शहादत की घटना है। दूसरा उनकी बहादुरी भी है और उनको जंग के तरीक़े का भी पता है। अकवा रज़ि ने इन लुटेरों से सब माल छीना और फिर अहम बात यह कि जब माल वापस ले लिया और फिर भी कहा कि मैं उनका पीछा कर के इन सबको क़तल कर दूं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनको जाने दो। जब माल वापस आ गया है तो छोड़ो। तो यह आदर्श है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क्योंकि आप को क़तल तथा फसाद उद्देश्य नहीं थी। यह मक़सद नहीं था। लुटेरों से और हमला आवरों से जब आप ने वापस माल ले लिया और सब लोग छोड़कर फ़रार हो गए , उन में से कुछ ज़ख़्मी भी हो गए तो आप ने भी फिर वहां किसी किस्म की जंग और क़तल तथा फसाद नहीं किया।

बहरहाल यह कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब उनसे ये बातें कर रहे थे कि उनको छोड़ो। वे चले गए हैं तो अब जाने दो। इस दौरान मैं बनी ग़त्फ़ान का एक आदमी आया उसने कहा कि अमुक आदमी ने उनके लिए ऊंट ज़बह किया है। जब वे उसका चमड़ा उतार रहे थे तो उन्होंने एक ग़ुबार देखा। उन्होंने कहा वे लोग आ गए। वे वहां से भी भाग गए। जब सुबह हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज हमारे बेहतरीन शाह सवार अबू क़तादह रज़ि हैं और प्यादों में बेहतरीन पियादा अर्थात पैदल चलने वालों में, जंग करने वालों में सलमह रज़ि हैं। सलमह रज़ि ने उन लोगों को मुश्किल में डाल दिया था। वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे दो हिस्से दिए एक सवार का और एक पैदल का। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना लौटते हुए मुझे अज़्बा ऊंटनी पर अपने पीछे बिठा लिया। तो कहते हैं कि जब हम जा रहे थे तो अन्सार के एक आदमी ने जिस से दौड़ में कोई आगे नहीं बढ़ सकता था उसने कहना शुरू कर दिया कि कोई मदीना तक दौड़ लगाने वाला है। अब जंगों और दुश्मनों के तंग करने के बावजूद सहाबा अपनी तफ़रीह के सामान भी करते रहते थे। एक दूसरे को हल्के फुल्के चैलेंज भी देते थे ताकि वक़्त भी गुज़र जाए और दुश्मनों का जो स्थायी ज़हनी दबाव भी जो है वह भी कुछ कम हो। बहरहाल उन्होंने कहा कि कोई है जो मुझसे दौड़ लगाए ?क्या कोई दौड़ने वाला है? कहते हैं उन्होंने कई बार यह बार-बार दुहराया तो मैंने जब यह बात सुनी तो मैंने दूसरे सहाबी को छिड़का कहा कि तुम किसी सम्माननीय की इज़्ज़त नहीं करते? किसी बुज़ुर्ग से नहीं डरते? उसने कहा नहीं सिवाए उस के कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हों। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इलावा मुझे किसी का ख़ौफ़ नहीं तो मैंने कहा हे रसूलुल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हूँ। मुझे इस आदमी से दौड़ लगाने दें। आप ने फ़रमाया ठीक है अगर तुम चाहते हो तो लगाओ। मैंने इस आदमी से कहा कि चलो। फिर कहते हैं कि मैंने अपने पांव

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

मोड़े और छलांग मारी और दौड़ पड़ा और मैं एक या दो घाटियाँ इसके पीछे दौड़ा फिर में अपनी ताक़त बचा रहा था फिर मैं धीरे से इस के पीछे दौड़ा फिर मैं तेज़ हुआ , उसे जा लिया। यह दौड़ लगती रही। वह मदीना का सबसे तेज़ दौड़ने वाला आदमी था। कहते हैं और तेज़ हो के मैंने उसे जा कर पकड़ लिया । मैंने उसे कंधे के बीच मुक्का मारा। मैंने कहा अल्लाह की क़सम! तू पीछे रह गया।

एक रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है उन्होंने कहा कि मैं मदीना तक इस से आगे रहा और फिर हम सिर्फ तीन रातें ठहरे यहां तक कि इस के बाद फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ख़ैबर की तरफ़ निकले।

(उद्धरित सही मुस्लिम भाग 9 पृष्ठ 228 से 238 किताबुल जिहाद वस्सैर,बाब ग़ज़्वः ज़ी कुर्द, हदीसः 3358,नूर फ़ाउंडेशन 2008ई)(सही अल्बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब जंग ज़ातुल क़रद हदीस 4194)

वहां ठहरे। फिर ख़ैबर की तरफ़ चले गए।

तारीख़ तबरी में इस जंग के बारे में कुछ विस्तार से इस तरह है। हज़रत आसिम बिन उम्र बिन क़तादह से रिवायत है कि जंग ज़ी कुर्द में दुश्मन के पास सबसे पहला घोड़ा हज़रत मुहरिज़ बिन नज़्लह रज़ि का पहुंचा जो बनू असद बिन ख़ुज़ैमह में से थे। हज़रत मुहरिज़ बिन नज़्लह रज़ि को क़ुमैरह भी कहा जाता था इसी तरह आप को क़ुमैर भी कहा जाता था और जब दुश्मन की तरफ़ से लूट मार और ख़तरे के लिए इज्तिमा का ऐलान हुआ तो हज़रत महमूद बिन मस्लमह रज़ि के घोड़े ने जो उन के बाग़ में बंधा हुआ था जब और घोड़ों की हिनहिनाहट की आवाज़ सुनी तो अपनी जगह उछल कूद करने लगा। ये एक उम्दा और सिधाया हुआ घोड़ा था। तब बनू अब्दे अश्हल की औरतों में से कुछ औरतों ने बंधे हुए घोड़े को इस तरह उछलते कूदते देखा तो हज़रत मुहरिज़ बिन नज़्लह रज़ि से कहा हे क़ुमैर! क्या आप ताक़त रखते हैं कि अपने इस घोड़े पर सवार हों और ये घोड़ा जैसा है वह आप उसे देख ही रहे हैं। फिर आप मुस्लमानों और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जा मिलें। आप ने कहा हाँ! में तैयार हूँ। फिर औरतों ने वह घोड़ा आप को दिया। आप,हज़रत मुहरिज़ रज़ि , इस पर सवार हो कर चल दिए। उन्होंने इस घोड़े की बाग ढीली छोड़ दी यहां तक कि आप ने इस जमाअत को पा लिया जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जा रही थी और उनके आगे आप खड़े हो गए। फिर हज़रत मुहरिज़ बिन नज़्लह रज़ि ने कहा हे थोड़ी सी जमाअत! ठहरो। यहां तक कि दूसरे मुहाजिर और अन्सार जो तुम्हारे पीछे हैं वे भी तुम से आ मिलें। रावी कहते हैं कि दुश्मन के एक आदमी ने आप पर हमला किया और आप को शहीद कर दिया। फिर वह घोड़ा बेक़ाबू हो कर भागा और कोई इस पर क़ाबू ना पा सका यहां तक कि वह बनू अबदे अश्हल के मुहल्ले में आकर उसी रस्सी के पास ठहर गया जिससे वह बंधा हुआ था। अतः मुस्लमानों में इस दिन आप के इलावा और कोई शहीद नहीं हुआ था और हज़रत महमूद रज़ि (तबक़ात इब्ने साद के अनुसार इन सहाबी का नाम हज़रत मुहम्मद बिन मसलमह रज़ि था। उनके घोड़े का नाम ज़ुल्लमहः था। एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत मुहरिज़ बिन नज़्लह रज़ि हज़रत उक्काशह बिन मिह्सन रज़ि के घोड़े पर शहादत के वक़्त सवार थे। इस घोड़े को जनाह कहा जाता था और कुछ जानवर दुश्मन के हाथ से छुड़ा लिए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने स्थान से रवाना हुए और जंग ज़ी कुर्द के पहाड़ पर पहुंच कर ठहरे और वहीं अन्य सहाबा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आ गए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन और एक रात वहां ठहरे रहे। सलमा बिन अकवा रज़ि ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह! अगर आप सौ आदमी मेरे साथ भेज दें तो मैं बाक़ी जानवर भी दुश्मन से छुड़ा लाता हूँ और उनकी गर्दन जा दबाता हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कहाँ जाओगे? इस वक़्त तो वे ग़त्फ़ान की शराब पी रहे हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा को सौ सौ में तक़सीम करते हुए उनमें खाने के लिए ऊंट तक़सीम किए जिन्हें सहाबा ने बतौर खाने के इस्तिमाल किया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना वापस तशरीफ़ ले आए।

(तारीख़ अत्तिबरी,भाग 3 ग़ज़्वः ज़ी कुर्द पृष्ठ 115,116 प्रकाशन दारुल फिक्र,द्वित्तीय प्रकाशन 2002 ई) (अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 70 मुहरिज़ बिन नज़्ल प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

और उन लोगों से कोई छेड़छाड़ नहीं किया। उनको छोड़ दिया। इन लोगों को जाने दिया और यही हज़रत मुहरिज़ रज़ि सिर्फ एक शहीद हुए। एक रिवायत के अनुसार घुड़सवारों में सबसे पहले शहीद थे और यही पहली रिवायत में भी है।

फिर जिन सहाबी का ज़िक्र है उनका नाम है हज़रत सुवैयबित बिन सअद रज़ि। आप को सुवैयबित बिन हर्मलह भी कहा जाता है। आप का नाम सुवैत बिन हर्मलह और सलीत बिन हर्मलह भी वर्णन किया गया है। हज़रत सुवैयबित रज़ि का सम्बन्ध क़बीला बनू अब्दुद्दार से था। उनकी माता का नाम हुनैदह था। आप आरम्भिक इस्लाम क़बूल करने वालों में शामिल थे। अक्सर सीरत लिखने वालों ने आप को मुहाजरीन हब्शा में शामिल किया है।

(असदुल गाबः फ़ी मारफ़तिस्सहाबः भाग 2 पृष्ठ 354 सुवैयबित बिन हरमिला दारुल फिक्र बेरूत लेबनान 2003 ई)

(अलासाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबः भाग 6 पृष्ठ 368 नुय्मान बिन अमरो दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लेबनान 2005 ई)

(तारीख़ दमिशक़ अल-कबीर ले इब्न असाकिर भाग 12 , अध्याय 24 पृष्ठ 117 ज़िक्र मन इस्महो सलीत दारुल अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान)

हज़रत सुवैयबित रज़ि ने मदीना की तरफ़ हिजरत की। हिजरत के बाद आप ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलमा अज़्लानी रज़ि के घर निवास किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सुवैयबित रज़ि और हज़रत आइज़ बिन माइस रज़ि के बीच भाईचारा स्थापित फ़रमाया था। हज़रत सुवैयबित रज़ि ने जंग बदर और जंग उहद में भी शिरकत की।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 65 सुवैयबित बिन सअद वुमन अब्दुद्दार बिन कुसा दारुल अहया अत्तुरास अल्अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

हज़रत उम्मे सलमह रज़ि वर्णन करती हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात से एक साल पहले बुस्रा,मुल्क शाम का एक इलाक़ा उस की तरफ़ व्यापार के लिए गए थे। उनके साथ नुअय्मान रज़ि और सुवैयबित बिन हर्मलन रज़ि ने भी सफ़र किया और ये दोनों जंग बदर में भी मौजूद थे। नुअय्मान रज़ि रास्ते के खाने पर निर्धारित थे। सुवैयबित रज़ि की तबीयत में मज़ाक था। उसने नुअय्मान रज़ि से कहा कि मुझे खाना खिलाओ। जो रास्ता का खाना था, सामान था उस के निगरान थे। क़ाफ़िले का खाने पीने का इंतिज़ाम उनके सपुर्द था। उन्होंने उनसे कहा खाना खिलाओ। उन्होंने जवाब दिया कि जब तक हज़रत अबू बकर रज़ि नहीं आएँगे मैं खाना नहीं दूँगा। उन्होंने कहा अगर तुम मुझे खाना नहीं दोगे तो मैं तुम्हें ग़ुस्सा दिलाऊँगा। यह घटना पहले भी मैंने संक्षिप्त वर्णन की थी । जब ये जा रहे थे तो इस दौरान में हज़रत सववय्बित रज़ि एक क़ौम के पास से गुज़रे तो सुवैयबित रज़ि ने उनसे कहा क्या तुम मुझ से मेरा एक ग़ुलाम ख़रीदोगे? उन्होंने जवाब दिया हाँ। सुवैयबित रज़ि ने इस क़बीले वालों को कहा कि वग ग़ुलाम बोलने वाला है याद रखना। और यही कहता रहेगा कि मैं आज़ाद हूँ। जब तुम्हें वह यह बात कहे तो तुम उस को छोड़कर मेरे ग़ुलाम को मेरे लिए ख़राब ना करना। उन्होंने जवाब दिया कि नहीं बल्कि हम उसे तुझ से ख़रीदना चाहते हैं। तो उन्होंने दस ऊंटनियों के बदला इस ग़ुलाम को ख़रीद लिया। फिर वे लोग हज़रत नुअय्मान रज़ि के पास आए और उनके गले में पगड़ी या रस्सी डाली। नुअय्मान रज़ि बोले कि यह आदमी तुम से मज़ाक़ कर रहा है। मैं आज़ाद हूँ ग़ुलाम नहीं हूँ। लेकिन उन्होंने जवाब दिया कि उसने तुम्हारे बारे में पहले ही हमें बता दिया था कि तुम यही कहोगे और वह पकड़ के ले गए। जब हज़रत अबूबकर रज़ी अल्लाह तआला अन्हो वापस आए और लोगों ने इस के बारे में आप को बताया तो आप उन लोगों के पीछे गए और उनको उनकी ऊंटनियां वापस दीं और नुअय्मान रज़ि को वापस लिया। वापस ले आए और कहा यह आज़ाद है ग़ुलाम नहीं है। उन्होंने मज़ाक़ किया था। इस तरह के मज़ाक़ भी सहाबा में चलते थे। बहरहाल जब ये लोग वापस पहुंचे, नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप को बताया तो रावी वर्णन करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा एक साल तक इस से आन्नद उठाते रहे।

(सुनन इब्न माजा किताबुल अदब बाबुल मज़ाह हदीस नंबर 3719)

(मुअज्जमुल बुलदान भाग 1 पृष्ठ 522 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी इस बात पर ख़ूब हँसे और एक साल तक लतीफ़ा मशहूर रहा। बहरहाल ऊपर वर्णन की घटना एक फ़र्क़ के साथ कुछ

किताबों में इस तरह भी मिलती है। लिखा है कि बेचने वाले हज़रत सुवैयबित रज़ि नहीं बल्कि हज़रत नुअयुमान रज़ि थे।

सहाबा के इस ज़िक्र के बाद में जो बात संक्षिप्त वर्णन करना चाहता हूँ वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम वस्सलाम के एक इलहाम के बारे में है कि "वस्सिअ मकानक" यह इलहाम आप को विभिन्न वक़्तों में हुआ। शुरू में इस वक़्त अल्लाह तआला ने "वस्सिअ मकानका" इलहाम फ़रमाया जब आप फ़रमाते हैं कि इस वक़्त शायद दो या तीन लोग मेरी मज्लिस में आया करते थे और कोई मुझे जानता नहीं था।

(उद्धरित सिराज मुनीर, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 12 पृष्ठ 73)

फिर मुख़्तलिफ़ वक़्तों में दूसरे इलहामों के साथ भी "वस्सिअ मकानका" इलहाम होता रहा अर्थात अपनी मकानियत को वसीअ करो और इस के साथ जो दूसरे इलहाम हैं उनमें ख़ुश ख़बरियों और मुख़्तलिफ़ रंग में अल्लाह तआला के फ़ज़लों के होने का भी ज़िक्र है। तो अल्लाह तआला जब अपने नबियों को इल्हाम से कोई हुक्म देता है कि यह करो तो इस का यह अर्थ होता है कि अल्लाह तआला उस के लिए अपने समर्थन और सहायता भी फ़रमाएगा और साधन के सामान भी पैदा फ़रमाएगा और फिर इस तरह यह पूर्णता को पहुँचेगा और यही हमारा तजुर्बा है। जमाअत की तारीख़ हमें बताती है कि किस शान से अल्लाह तआला ने इस इलहाम को पूरा किया और अभी भी पूरा फ़रमाता चला जा रहा है। हम जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के तुच्छ ग़ुलाम हैं हमें भी इस इलहाम के बारे में विभिन्न वक़्तों में पूरा होने के नज़ारे दिखाता चला जा रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का हर इलहाम और अल्लाह तआला का आपको किसी भी मामला में हुक्म देना या पेशगोई के रंग में बताना असल में तो आप के माध्यम से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म अर्थात इस्लाम के प्रकाशन और तरक़्क़ी के होने की ख़ुशख़बरी है और फिर आप के बाद सिलसिला ख़िलाफ़त के माध्यम से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को दुनिया में फैलाने की ख़ुशख़बरी है। अत: हर क़दम जो हमारा आगे बढ़ता है या जो तरक़्क़ी हम देखते हैं वह असल में अल्लाह तआला के इस मंसूबे का हिस्सा है जो अल्लाह तआला ने इस्लाम को दुनिया में फैलाने के लिए बनाया हुआ है।

इस प्रस्तावना के बाद में फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के इस इलहाम की तरफ़ आता हूँ अर्थात "वस्सिअ मकआनक।" ख़िलाफ़त के यहां यूके में हिजरत के बाद बर्तानिया में भी, यूरोप में भी, अमरीका में भी, अफ़्रीक़ा और दुनिया के दूसरे देशों में भी जमाअत के फैलाओ के साथ मकानियत वसीअ होती चली गई। अल्लाह तआला हमें जगहें मुहय्या करता चला गया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहिमहुल्लाह जब यहां हिजरत कर के आए थे तो शीघ्र अल्लाह तआला ने ग़ैर मामूली तौर पर अपनी वुसअत का एक नज़ारा दिखाया और इस्लामाबाद में 25 एकड़ ज़मीन जमाअत को ख़रीदने की तौफ़ीक़ मिली और इस के बाद और इस में छ: एकड़ भी शामिल हो गई जहां जलसा भी होता रहा और कुछ रिहायश भी जमाअत के काम करने वालों के लिए, वाक़फ़ीन ज़िंदगी के लिए मयस्सर थी। एक बंगला भी जो ख़लीफ़तुल मसीह की रिहायश के लिए था। कुछ दफ़तर भी थे। एक बैरक नुमा जो जगह थी इस में मस्जिद भी बनाई गई थी और मुझे याद है जब एक बार यहां आया 1985ई में तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने मुझे खासतौर पर फ़रमाया था कि बड़ी अच्छी जगह अल्लाह तआला ने हमें मर्कज़ के लिए भी मुहय्या कर दी है। कम-ओ-बेश यही शब्द थे मगर अक्षरश: नहीं। और मुझे यक़ीन है और कुछ दूसरी गवाहियां भी ज़ाहिर करते हैं कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे रहिमहुल्लाह तआला का यहां बाक़ायदा मर्कज़ बनाने का इरादा था। बहरहाल हर काम के लिए अल्लाह तआला ने एक वक़्त निर्धारित फ़रमाया हुआ है। अब अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दी कि इस्लामाबाद में नई तामीर हुई है। कुछ दफ़तर बेहतर सुविधाओं के साथ बनाए गए हैं। बाक़ायदा मस्जिद बनाई गई है। समय के ख़लीफ़ा की रिहायश बनाई गई है और वाक़फ़ीन ज़िंदगी और काम करने वालों के लिए घर भी तामीर हुए हैं और भी तामीर होंगे।

लंदन में दफ़ातर आरिज़ी तौर पर घरों को दफ़्तर में तबदील कर के इस्तिमाल हो रहे थे और बड़े तंग कमरों में मुश्किल से गुज़ारा हो रहा था। काम के फैलाव की वजह से जगह की बहुत कमी हो चुकी थी। इस के इलावा कौंसल को भी एतराज़ रहता था कि यह घर रिहायश के मक़सद के लिए बनाए गए हैं तुम ने दफ़्तर बनाए हुए हैं यहां से दफ़्तर ख़त्म करो। प्राय समय समय पर यह शोर उठता रहता था। अब इस नई तामीर से तीन चार दफ़तर जो यहां घरों में थे वे इंशा अल्लाह इस्लामाबाद मुंतक़िल हो जाऐंगे। इसी तरह अल्लाह तआला ने इस्लामाबाद मंसूबे के साथ ही फ़ारनहम (Farnham)में एक बड़ी दो मंज़िला इमारत भी जमाअत को मुहय्या फ़र्मा दी जिसमें प्रैस भी काम कर रहा है। यह इमारत दो तीन मील की दूरी पर है और कुछ दफ़ातर भी हैं। फिर ख़ुद्दामुल अहमदिया को भी यहां एक बड़ी इमारत ख़रीदने की तौफ़ीक़ मिल गई। इस से पहले क़रीब ही जलसा गाह के लिए 200 से अधिक एकड़ की जगह हदीक़तुल महदी ख़रीदने की भी अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ दे दी। फिर जामिया जो लंदन में था यहां से मुंतक़िल हो गया और ग़ैर मामूली तौर पर कम क़ीमत पर मौजूदा जगह जामिया की अल्लाह तआला ने बेहतर माहौल और सहूलतों के साथ प्रदान फ़र्मा दी। तक़रीबन तीस एकड़ उस की ज़मीन भी है और ये सब जगहें इस्लामाबाद से दस से बीस मिनट के फ़ासले पर हैं। इस्लामाबाद के मौजूदा मंसूबे के साथ इन सारी जगहों के ख़रीदने की प्लैनिंग कोई पहले नहीं की गई थी बल्कि ये सब अल्लाह तआला का मन्सूबा था कि ये सारी जगहें एक इलाक़े में क़रीब क़रीब इकट्ठी होती गईं और अल्लाह तआला ने मर्कज़ के साथ साथ ही दूसरी चीज़ें भी प्रदान फ़र्मा दें। जामिया भी क़रीब होना ज़रूरी है। दुआ करें कि अल्लाह तआला इन सारी जगहों का, इन सारी चीज़ों का एक इलाक़े में इकट्ठा होना हर लिहाज़ से बाबरकत फ़रमाए।

जैसा कि मैंने कहा है कि ख़लीफ़ा वक़्त की रिहायश गाह और दफ़्तर इत्यादि भी वहां बन गए हैं। बड़ी मस्जिद भी बन गई है। इसलिए अब मैं भी लंदन से इंशा अल्लाह तआला कुछ दिनों में इस्लामाबाद मुंतक़िल हो जाऊँगा। वहां मुंतकली के बाद हर लिहाज़ से वहां की रिहायश भी बरकतों वाली होने के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला हमेशा फ़ज़ल फ़रमाता रहे। अल्लाह तआला इस्लामाबाद से इस्लाम की तब्लीग़ के काम को पहले से ज़्यादा वुसअत प्रदान फ़रमाए और वस्सिअ मकअनक सिर्फ़ मकानियत की वुसअत का माध्यम ही ना हो बल्कि अल्लाह तआला के मन्सूबों की पूर्णता में वुसअत का माध्यम भी बने। यहां ये भी स्पष्ट कर दूं कि मस्जिद फ़ज़ल के जो पड़ोसी थे उन पड़ोसियों को मस्जिद आने वाले अहमदियों की वजह से ट्रैफ़िक और पार्किंग की वजह से हमेशा तंगी और शिकवा रहा है। इसलिए नई जगह पड़ोसियों को और इलाक़े के लोगों को नमाज़ों के लिए और वैसे भी जो इस्लामाबाद आने वाले हैं उनकी वजह से किसी किस्म का शिकवा ना हो। उन्हें उस का मौक़ा ना दें। इर्द-गिर्द के जो लोग हैं वे आएँगे तो ट्रैफ़िक की पाबंदी और एहतियात को हमेशा सामने रखें।

जहां तक जुम्अ: का सवाल है प्राय: जुम्अ: यहीं बैतुल फुतूह में इंशा अल्लाह तआला आ कर पढ़ाया करूँगा। अमीर साहिब को मैंने कहा है। वह बाक़ायदा एक मंसूबा बंदी कर के जमाअतों को भी बताएँगे कि जिन लोगों ने या जमाअतों ने इस्लामाबाद में जुम्अ: पढ़ना होगा या जो वहां पढ़ना चाहते हैं वे कौन लोग होंगे। वहां की इर्द-गिर्द की जमाअतें होंगी। अगर इन में से जो भी वहां जा के पढ़ना चाहें वे पढ़ सकते हैं। किस-किस इलाक़े के लोग होंगे ?किस तरह तक़सीम होगी? इस्लामाबाद के बीस मील के इलाक़े के इर्द-गिर्द के लोग जो हैं वे तो वहीं जमा हो सकते हैं। वहां जुमा पढ़ सकते हैं। बहरहाल जो विस्तार है वे जमाअतों को अमीर साहिब की तरफ़ से सम्बन्धित सदरों को मिल जाएगी। बीस मील से बाहर जिन लोगों ने वहां जुम्अ: पढ़ना है उनके बारे में भी पता लग जाएगा कि कौन कौन सी जमाअतें हैं या किस तरह उनकी तरतीब दी जाएगी। बहरहाल दोबारा में यही कहता हूँ कि दुआ करें अल्लाह तआला इस मंसूबे को और वहां मुंतक़िल होने को हर लिहाज़ से बरकत वाला फ़रमाए

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 04-10 जनवरी 2019 पृष्ठ 5-8)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

पृष्ठ 2 का शेष

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8 बजकर 50 मिनट पर ख़त्म हुआ।

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर आदरणीय मुनीर अहमद बट साहिब मरहूम की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर पढ़ाई। मरहूम की 10 सितंबर 2018 को आफ़न बाख जर्मनी में वफ़ात हुई। इन्ना इलैहि वा इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम मूसी थे और आदरणीय शाकिर मुस्लिम साहिब अमीर तथा मुबल्लिग़ इंचार्ज नाईजर के पिता थे। वफ़ात के वक़्त उम्र 75 साल थी। निहायत मुख़लिस और फ़िदाई अहमदी थे। पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा छ: बच्चे छोड़े हैं।

ऐलान निकाह

नमाज़ जनाज़ा की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ले आए और नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद आदरणीय सदाक़त अहमद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की इजाज़त से निम्निलिखित पाँच निकाहों का ऐलान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए इस दौरान तशरीफ़ फ़र्मा रहे।

(1) प्रिया अनीला सदफ़ चौधरी पुत्री आदरणीय जमील अहमद चौधरी साहिब (जर्मनी) का निकाह प्रिय अताउल मुनइम चौधरी पुत्र आदरणीय इफ़्तिख़ार अहमद चौधरी (जर्मनी) के साथ तय पाया। (2) प्रिया समा अकमल पुत्री आदरणीय मुहम्मद अकमल ख़ान साहिब (जर्मनी) का निकाह प्रिय आसिफ़ अनवर पुत्र आदरणीय अब्बास अनवर साहिब जर्मनी के साथ तय पाया। (3) प्रिया कायनात महमूद ऐवान पुत्री आदरणीय ख़ालिद महमूद ऐवान जर्मनी का निकाह प्रिय कामरान नासिर अशर्फ़ पुत्र आदरणीय मुहम्मद अशर्फ़ जर्मनी के साथ तय पाया। (4)प्रिया माहिम एजाज़ पुत्री आदरणीय मुहम्मद एजाज़ साहिब जर्मनी का निकाह प्रिय मुबारक डोगर पुत्र आदरणीय मजीद अहमद डोगर साहिब जर्मनी से तय पाया। (5) प्रिया सुबाअल्लाह पुत्री आदरणीय अमानुल्लाह साहिब जर्मनी का निकाह प्रिय Jonas Glanz पुत्र आदरणीय Anderas Glanz साहिब के साथ तय पाया। निकाहों के ऐलान के बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ कराई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

12 सितंबर 2018 (दिनांक बुधवार)

जर्मनी से रवानगी और बरसल्ज़ बैल्जियम में आना

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 5 बजकर 50 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

आज प्रोग्राम के अनुसार फ्रेनकफ़र्ट जर्मनी से बरसल्ज़ (बैल्जियम) के लिए रवानगी थी। फ्रनकफ़रट रीजन और इर्द-गिर्द की जमाअतों से जमाअत के दोस्तों मर्द तथा औरतें, बच्चे बूढ़े बड़ी संख्या में अपने प्यारे आक़ा को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही बैयतुस्सबूह के सेहन में जमा होने शुरू हो गए थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ सुबह दस बजकर पच्चास मिनट पर अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। छोटे बच्चे और बच्चियां ग्रुप की सूरत में अलविदाई नज़्में पढ़ रहे थे। जमाअत के दोस्तों दो लइनों में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए जमाअत के दोस्तों के मध्य कुछ वक़्त के लिए रौनक अफ़रोज़ रहे। हर छोटे बड़े ने प्यारे आक़ा का दर्शन किया। औरतें एक तरफ़ खड़ी ज़यारत के सौभाग्य से फ़ैज़याब हो रही थीं।

10 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और क़ाफ़िला सफ़र पर रवाना हुआ। दोनों तरफ़ खड़े दोस्त मर्द तथा औरतें निरन्तर अपना हाथ बुलंद करते हुए अपने प्यारे और महबूब आक़ा को अलविदा कह रहे थे। बहुतों की आँखों से आँसू जारी थे। जुदाई के यह लमहे इन आशिकों के लिए बहुत कठिन थे। आज प्रोग्राम के अनुसार फ्रनकफ्रट जर्मनी से बरसल्ज़ जाते हुए जर्मनी का बॉर्डर क्रास करने के बाद बैल्जियम के शहर आल्कन में मस्जिद बैयतुर्रहीम के उद्घाटन का प्रोग्राम था।

फ्रनकफ्रट से आल्कन शहर का दूरी तीन सौ पच्चास किलोमीटर है। क़रीबन सवा तीन घंटे के सफ़र के बाद जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की गाड़ी शहर आल्कन की सीमा में दाख़िल हुई तो शहर की पुलिस ने क़ाफ़िला को स्कूर्ट किया और साथ साथ रास्ता क्लीयर किया। 2 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैयतुर्रहीम तशरीफ़ लाए। स्थानीय जमाअत और बैल्जियम की अन्य जमाअतों से आए हुए दोस्त मर्द औरतें और बच्चे अपने प्यारे आक़ा के आने के मुंतज़िर थे। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ गाड़ी से बाहर तशरीफ़ लाए तो जमाअत के दोस्तों ने बड़े पुरजोश अंदाज़ में स्वागत किया और बच्चों और बच्चियों ने दुआ की नज़्में और स्वागत के गीत पेश किए। हर छोटा बड़ा अपने हाथ बुलंद करके हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कह रहा था। औरतें ज़यारत से फ़ैज़याब हो रही थीं।

आदरणीय अमीर साहिब जमाअत बैल्जियम डाक्टर इदरीस अहमद साहिब, मुबल्लिग़ इंचार्ज बैल्जियम आदरणीय हाफ़िज़ एहसान सिकन्दर साहिब और स्थानीय जमाअत के मुबल्लिग़ आदरणीय हसीब अहमद साहिब ने हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा और मुसाफ़ा का सौभाग्य हासिल किया।

इस मौक़ा पर शहर आल्कन के मेयर Mr. Marc Penxten भी आए थे। महोदय ने हुज़ूर अनवर का स्वागत करते हुए हुज़ूर अनवर को ख़ुश-आमदीद कहा और मुसाफ़ा का सौभाग्य पाया। महोदय हुज़ूर अनवर के आने से पैंतालीस मिनट पहले बैयतुर्रहीम पहुंच गए थे। मेयर ने कहा कि मैं जिस से भी आप अहमदी लोगों के बारे में पूछता हूँ वे सब आपके बारे में अच्छी प्रतिक्रियाओं को प्रकट करते हैं। मैं अपने लिए सम्मान की बात समझता हूँ कि मुझे मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर यहां आने की दावत दी गई। और आज मुझे पहली बार ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात करने का मौक़ा मिला है। यह मेरी ख़ुशनसीबी है कि मैं आपके ख़लीफ़ा के स्वागत के लिए यहां हाज़िर हुआ हूँ और अपनी ज़रूरी मीटिंगज़ छोड़कर यहांआया हूँ।

हुज़ूर अनवर ने मेयर साहिब से फ़रमाया कि आपके यहां आने का बहुत बहुत शुक्रिया और आप का यहां मुझे रिसीव करने का भी बहुत शुक्रिया। इस पर मेयर साहिब ने जवाब दिया कि ये मेरे लिए सम्मान और ख़ुशी की बात है।

मस्जिद बैयतुर्रहीम का उद्घाटन

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बैरूनी दीवार में लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बैरूनी सेहन में एक पौधा लगाया। इस के बाद मेयर साहिब ने भी एक पौधा लगाया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद बैयतुर्रहीम के कवाइफ़

मस्जिद बैयतुर्रहीम की यह इमारत 15 अप्रैल 2016 ई को ख़रीदी गई थी। इस जगह का कुल क्षेत्रफल पंद्रह हज़ार वर्ग मीटर है। बिल्डिंग के सामने वाले ब्लॉक में ग्रांऊड फ़्लोर पर एक रिहायशी हिस्सा तैयार किया गया है। इसी हिस्सा में हुज़ूर अनवर ने यहां अपना सीमित निवास फ़रमाया था। इसके ऊपर पहली मंज़िल पर मुरब्बी हाऊस तैयार किया गया है और इस तरह दूसरी मंज़िल पर दो कमरों, किचन, बाथरूम, स्टिंग और डाइनिंग रुम पर आधारित एक गेस्ट हाऊस भी मौजूद है। मध्य बलॉक में मर्दाना मस्जिद हाल है जिसका रकबा 250 वर्ग मीटर पर आधारित है जिसकी एक दीवार और छत का कुछ हिस्सा शीशा का बना हुआ है जिसकी वजह से यह रोशन और ख़ूबसूरत दिखाई देता है। हाल के आख़िर पर नए वाश रूमज़ बनाए गए हैं। मर्दाना मस्जिद के ऊपर पहली मंज़िल पर एक लाइब्रेरी और ख़ूबसूरत हाल भी मौजूद है। तीसरे और आख़िरी बलॉक में औरतों का मस्जिद हाल है और बच्चों वाला एक कमरा भी है। इस हाल के आख़िर पर भी नए वाश रूमज़ बनाए गए हैं ओर औरतों के इस हाल के ऊपर एक बहुत बड़ा प्रोफ़ैशनल किचन है जिस में हज़ारों लोगों का खाना बड़ी आसानी से पकाया जा सकता है। इस किचन के साथ Chiller Room है जिस में बड़ी संख्या में गोश्त और अन्य वस्तुएं फ़रीज़ की जा सकती हैं।

बैयतुर्रहीम की मुरम्मत और तैयारी के लिए आदरणीय अमीर साहिब बैल्जियम और नैशनल सेक्रेटरी जायदाद की निगरानी में सारी जमाअतों के ख़ुद्दाम, अंसार

और इतफ़ाल ने वक़ार अमल के माध्यम से सेवा भावना से इस काम में हिस्सा लिया और भरपूर सहयोग किया।

मस्जिद बैयतुर्रहीम की ज़मीन का रकबा बहुत वसीअ है। यहां 150 गाड़ीयों के लिए बाक़ायदा पक्की पार्किंग मौजूद है। इस के इलावा एक बड़ी ग्रांऊड भी इस ज़मीन में शामिल है जहां ज़रूरत के समय सैंकड़ों गाड़ियां पार्क की जा सकती हैं।

यह इमारत चार लाख पंद्रह हज़ार यूरो में ख़रीदी गई और इस की रेनोवेशन और फ़र्रनेशिंग पर क़रीबन एक लाख पच्चास हज़ार यूरो के खर्च हुए इस इमारत की रेनोवेशन का लगभग सत्तर प्रतिशत काम वक़ारे अमल के माध्यम से किया गया और इस तरह क़रीबन एक लाख पच्चास हज़ार यूरो की रक़म बचाई गई।

2 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा करके पढ़ाई जिसके साथ ही इस मस्जिद का उद्घाटन हुआ। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताब फ़रमाया।

ख़िताब हुज़ूर अनवर उद्घाटन मस्जिद बैयतुर्रहीम

तशह्हुद ताव्वुज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अलहमदो लिल्लाह कि आज इस शहर की जमाअत को अल्लाह तआला ने मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है यह एक ऐसा सैंटर प्रदान फ़रमाया है कि जिसको आपने मस्जिद की शक्ल दे दी। मस्दिजों की तामीर के बाद एक अहमदी और एक सच्चे मुसलमान का अल्लाह तआला की शिक्षा पर अनुकरण करने का प्रकटन पहले से बहुत बढ़कर होना चाहिए ताकि इर्दगिर्द के लोगों को इस्लाम की शिक्षा का पता चले। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने यही फ़रमाया है कि जहां इस्लाम की शिक्षा फैलानी है, अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाना है वहां मस्जिद बना दो। अत: मस्जिद बनाने के बाद आप लोगों की ज़िम्मेदारियाँ पहले से बहुत बढ़ गई हैं। यहां के मेयर साहिब भी तशरीफ़ लाए और उन्होंने जिस अंदाज़ में अपने विचारों का प्रकट क्या यह हमारे लिए सम्मान योग्य है। प्राय इस्लाम के बारे में दुनिया और विशेषकर पश्चिमी दुनिया में बहुत ग़लत विचार पैदा हो चुके हैं। ऐसे हालात में हुकूमत का और लोकल प्रबन्ध का करना उनकी तरफ़ से एक बहुत उच्च आचरण का प्रकटन है। इस को क़ायम रखने के लिए आप अहमिदयों को पहले से बढ़कर अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा करनी चाहिऐं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ये ज़िम्मेदारियाँ हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाई हैं और अक्सर मैं वर्णन करता हूँ। आप ने अपने प्रादुर्भाव का मक़सद दो चीज़ों को क़रार दिया। एक यह कि बंदा और ख़ुदा में जो दूरी पैदा हो गई है उस को दूर करना और बंदे को अल्लाह का हक़ अदा करने वाला बनाना। अल्लाह तआला का हक़ क्या है? यही कि उस की इबादत की जाए और इबादत का हक़ उस वक़्त अदा होता है जब आप नेक नीयत हो कर , ख़ालिस हो कर अल्लाह तआला की इबादत के लिए हाज़िर हूँ। उन लोगों की तरह नहीं कि जिनके बारे में आता है कि इन के लिए इबादत करना मुश्किल होता है। इबादत के लिए बुलाओ , नेक कामों के लिए बुलाओ तो उनके क़दम भारी हो जाते हैं। अत: ख़ालिस हो कर अल्लाह की इबादत करना एक अहमदी मुसलमान का बुनियादी फ़र्ज़ है जिसे हर वक़त समक्ष रखना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आजकल यहां पश्चिमी दुनिया में जहां हर क़दम पर दुनियावी इच्छाओं को प्राथमिकता दी जाती है, दुनियावी चकाचौंध हर सड़क के हर कोना और हर गली में नज़र आती है, बाज़ारों में नज़र आती है, जहां इन्सान अल्लाह तआला से दूर हट रहा है , मज़हब से दूर हट रहा है और हद से ज़्यादा दुनिया के पीछे पड़ा हुआ है, ऐसे में अल्लाह की इबादत के लिए आना एक मुसलमान के लिए बहुत अधिक ज़रूरी बात है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह ने जो पाँच नमाज़ों को फ़र्ज़ क़रार दिया वह सिर्फ इस ज़माना के लिए नहीं था। जैसा कि कुछ लोग कह देते हैं कि पाँच नमाज़ों का हुक्म उस दौर के अनुसार था आजकल तो इतनी मसरुफ़ियात हैं, पाँच नमाज़ें कैसे पढ़ी जा सकती हैं। यही क़ुर्बानी है जो अल्लाह के लिए आपने करनी है। यही इस अहद की पाबंदी है जो आप धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने के लिए करते हैं। अत: दुनिया को छोड़कर फिर अल्लाह तआला के लिए हाज़िर होना ज़रूरी है। मस्जिद का मतलब ही यह है कि लोग अल्लाह की इबादत के लिए आएं और इकट्ठे हो कर ,जमा हो कर जमाअत के साथ नमाज़ अदा करें। और मर्दों के लिए विशेषकर ये हुक्म है कि वे बाजमाअत नमाज़ अदा करें। ये उन पर फ़र्ज़ है। इक़ामुस्सालता का मतलब ही यह है कि नमाज़ क़ायम करना और बाजमाअत नमाज़ अदा करना। अत: इस मस्जिद की तामीर का हक़ तभी अदा होगा कि जब आप उस का हक़ अदा करेंगे और पांचों वक़्त उस को भरा रखेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: दूसरा मक़सद हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के आने का इन्सानों के हक़ अदा करना था। इन्सानों का हक़ एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। बल्कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम ने एक मौक़ा पर तो यह फ़रमाया है कि कई बार बंदों के हक अल्लाह तआला के हक़ से ऊपर हो जाते हैं। अर्थात अगर इन्सान को ज़रूरत है, इन्सानी जान को ख़तरा है, एक तरफ़ इन्सानी जान बचानी है और दूसरी तरफ़ अल्लाह का हक़ अदा करना है , नमाज़ पढ़नी है या कोई और हक़ अदा करना है तो वहां इन्सानी जान बचाना ज़्यादा ज़रूरी हो जाता है। यह इन्सान का हक़ है और इसी का सवाब है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर बन्दों का हक़ अदा नहीं किया जा रहा तो अल्लाह तआला ऐसे नमाज़ियों के बारे में फ़रमाता है कि उनकी नमाज़ें उनके मुँह पर मारी जाती हैं। क्योंकि ज़ाहिर में ये लोग अल्लाह तआला का हक़ अदा कर रहे हैं, अल्लाह तआला की इबादत करने आए हैं लेकिन वे उस की मख़लूक़ का हक़ अदा नहीं कर रहे। इन सारी बातों पर अनुकरण नहीं कर रहे जिनके करने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है। तो ऐसी नमाज़ें फिर इन्सान के लिए हलाकत का कारण बन जाती हैं। अत: इस बात का हमेशा ख़्याल रखें कि एक दूसरे के हक़ अदा करने हैं। आपस में जमाअत के अंदर भी मुहब्बत और प्यार को बढ़ाना चाहिए , रुहमाउ बैनहुम् का मक़सद यही है। इस में मोमिनों की निशानी बताई गई है कि वे आपस में मुहब्बत और प्यार से रहने वाले हैं। दुनिया को बताएं कि भाईचारा क्या होता है। अगर आपस में ही मुहब्बत और भाईचारा नहीं तो दुनिया को क्या सबक़ देंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह इन्सानों के हुक़ूक़ की अदायगी को और बढ़ाते चले जाएं। पड़ोसियों के हक़ अदा करने है। इस का भी क़ुरआन करीम में बहुत हुक्म दिया गया है। बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यह फ़रमाया है कि मुझे इस शिद्दत से पड़ोसियों के हक़ अदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाया गया कि मुझे ख़्याल हुआ कि ये शायद विरासत में भी हक़दार क़रार दे दिए जाएं। अत: अपने पड़ोसियों को भी पहले से बढ़कर ये बताना होगा और इस का प्रकट करना होगा कि हम पड़ोसियों के हक़ अदा करने वाले हैं और सामूहिक रूप से इस सारे शहर का हक़ अदा करने वाले हैं। अमन और प्यार और मुहब्बत की फ़िज़ा क़ायम करने वाले हैं। अत: इन बातों को अपने सामने रखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस मस्जिद की तामीर के बाद या इस जगह को मस्जिद में बदलने के बाद उस का नाम तो आपने मस्जिद रख दिया है। इस का हक़ तब अदा होगा जब इर्द-गिर्द के लोगों को पता चलेगा कि अब यहां आने वाले मुसलमान, यहां इबादत करने वाले लोग हमारे लिए किसी मुश्किल का कारण नहीं बन रहे, बल्कि हमारे लिए आसानियां पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। इस मस्जिद की तामीर ने यहां के लोगों के दिलों में हमारे लिए पहले से बढ़कर मुहब्बत और प्यार पैदा कर दिया है और इस तरफ़ ध्यान दिलाई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह करे कि आप अल्लाह तआला के हक़ अदा करने वाले हूँ। इस मस्जिद के हक़ अदा करने वाले हूँ। पांचों वक़्त ये मस्जिद खुली रहे और इस मस्जिद की आबादी भी बढ़े। इसी तरह आपस में प्यार तथा मुहब्बत भी पैदा हो और इर्दगिर्द के इलाक़ा में भी , शहर में भी, ग़ैरों में भी यह एहसास पैदा हो कि आप लोग उनका हक़ अदा करने वाले हैं, अमन और प्यार की फ़िज़ा क़ायम करने वाले हैं। ना कि आम तास्सुर जो मुसलमानों के बारे में है कि ये फ़साद और फ़ित्ना और दहश्तगर्दी करने वाले हैं बल्कि ये वे मुसलमान हैं जिनका काम सिर्फ अमन और प्यार क़ायम करना है। अल्लाह तआला आपको इस पैग़ाम को पहुंचाने

की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और इस इलाक़ा के लोगों को भी इस पैग़ाम को समझने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। और जिस तरह हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मस्जिद बनाने के बाद परिचय के साथ जमाअत फैलती है यहां भी अल्लाह तआला जमाअत के फैलने के सामान पैदा फ़रमाए।

ख़िताब के आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद आदरणीय अमीर साहिब जर्मनी अब्दुल्लाह वागस हाऊज़र साहिब , मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी आदरणीय सदाक़त अहमद साहिब, नेशनल जनरल सैक्रेटरी आदरणीय मुहम्मद इलयास मजोका साहिब , नायब जनरल सैक्रेटरी आदरणीय जरी उल्लाह साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला और आदरणीय सदर साहिब ख़ुद्दामुल अहमदिया जर्मनी हसनात अहमद साहिब ने अपने ख़ुद्दाम की सेक्योरिटी टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की सआदत हासिल की। जर्मनी से ये दोस्त हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को अलविदा कहने के लिए क़ाफ़िला के साथ आए थे। दोपहर के खाने के बाद उन्होंने यहां से फ्रनकफ्रट वापस जाना था।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस इमारत का निरीक्षण फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने इस इमारत के रिहायशी हिस्से देखे। लाइब्रेरी हाल का भी निरीक्षण फ़रमाया। बड़े किचन में भी तशरीफ़ ले गए और निरीक्षण के दौरान हिदायत फ़रमाई कि किचन में जो टायलज़ लगी हुई हैं ये भी तबदील करवाईं। इसी तरह फ़रमाया किचन में Aspirator बनाएँ । इस पर अमीर साहिब ने निवेदन किया कि यह पहले से मौजूद हैं। उनका इलैक्ट्रिक सिस्टम तबदील करके उनको प्रयोग करेंगे।

इस के बाद हुज़ूर अनवर पहली मन्ज़िल की छत के एक खुले हिस्सा में तशरीफ़ ले आए और मस्जिद की ज़मीन की सीमा के बारे में पूछा। इस पर अमीर साहिब बेल्जियम ने विभिन्न जगहों से निशानदेही की और बताया कि कहाँ तक हमारी जगह है और हदबंदी है। निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले आए।

3 बज कर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ औरतों के हाल में तशरीफ़ ले आए जहां बच्चियों के ग्रुप ने दुआइया नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। औरतों ने शरफ़ ज़यारत हासिल किया। हुज़ूर अनवर ने कृपा करते हुए बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अदा अल्लाह तआला मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ले आए जहां स्थानीय जमाअत की आमिला के मेम्बरों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने कृपा करते हुए इस मौक़ा पर फ़रमाया कि जमाअत के सारे मेम्बर भी आ जाऐं। अत: स्थानीय जमाअतों के सब दोस्त ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का शरफ़ पाया। हुज़ूर अनवर ने कृपा करते हुए बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार 4 बजकर 40 मिनट पर यहां से बरसल्ज़ के लिए रवानगी हुई। यहां से बर्सल्ज़ का दूरी 85 किलो मीटर है। एक घंटा बीस मिनट के सफ़र के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की 6 बजे अहमिदया मिशन हाऊस बैयतुस्सलाम बर्सल्ज़ तशरीफ़ आवरी हुई। स्थानीय जमाअत के दोस्त मर्दों औरतों और नेशनल आमला के मेम्बरों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़ा जोश के साथ स्वागत किया।

स्वागत करने वाले ये सैंकड़ों लोग बैल्जियम की 13 जमाअतों से आए थे। उन में अरब नए अहमदी भी शामिल थे। हर कोई प्यारे आक़ा का दीदार करके ख़ुशी तथा प्रसन्नता से भरा हुआ था। बच्चियां स्वागत गीत प्रस्तुत कर रहीं थीं।

इस मौक़ा पर मिशन हाऊस के इलाक़ा Dilbeek के पुलिस चीफ़ Jurgen Coomans साहिब अपने एक पुलिस ऑफीसर के साथ आए हुए थे। हुज़ूर अनवर ने इन दोनों मेहमानों को मुसाफ़ा के सौभाग्य से नवाज़ा और उनसे बातचीत फ़रमाई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद करके सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

पुलिस चीफ़ Jurgen Coomans साहिब ने कहा कि हुज़ूर अनवर अमन की स्थापना के लिए जो कोशिश कर रहे हैं और इन्सानियत की भलाई के लिए जो काम कर रहे हैं मैं इस से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। हुज़ूर अनवर जब यहां से जलसा के लिए जाएंगे तो हम पुलिस स्कूर्ट देंगे।

नमाज़ों की अदायगी के लिए मिशन हाऊस के बैरूनी भाग में मार्की लगाई गई थी। 8 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ ले आए और जलसा पर आने वाले मेहमानों के प्रबन्ध की समीक्षा ली और उनकी रिहायश के प्रबन्ध और खाना खिलाने के प्रबन्ध के बारे में पूछा।

इंतिज़ामीया ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि यहां मिशन के सेहन में रिहायश के लिए एक अलग मार्की लगाई गई है और खाना खिलाने के लिए एक अलग मार्की में प्रबन्ध किया गया है। इसी तरह जलसा गाह के हाल के एक हिस्सा में भी मेहमानों की रिहायश और खाने का प्रबन्ध किया गया है।

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि इंडोनेशिया के जो मेहमान जर्मनी से यहां जलसा के लिए आ रहे हैं उनका प्रबन्ध कहाँ किया गया है? इस पर हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में रिपोर्ट प्रस्तुत की गई कि उनका प्रबन्ध Antwerpen के मिशन हाऊस में किया गया है। यहां से 45 किलोमीटर है। आधा घंटा से कम का रास्ता है।

हुज़ूर अनवर ने औरतों के प्रबन्ध के बारे में पूछा जिस पर रिपोर्ट प्रस्तुत की गई कि उनकी रिहायश के लिए मस्जिद का लजना हाल और मर्दाना हाल दोनों मुहय्या किए गए हैं और खाने की अलग मार्की लगाकर प्रबन्ध किया गया है। जलसा गाह में भी उनके खाने के लिए अलग हाल का प्रबन्ध किया गया है।

खाना पकाने के बारे में से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में रिपोर्ट प्रस्तुत की गई कि चार हज़ार लोगों तक खाना मुहय्या करने का प्रबन्ध है। हमारा अंदाज़ा है कि बाहर से आने वाले मेहमानों को शामिल करके संख्या यहां तक पहुंच जाएगी। इसके समक्ष हम ने प्रबन्ध किया हुआ है।

म. टी. ए इंटरनेशनल की लंदन से आने वाली वैन पार्किंग एरिया में पार्क की गई थी। हुज़ूर अनवर ने mta के स्टाफ़ मेम्बर और यहां की इंतिज़ामीया से पूछा कि यह यहां महफ़ूज़ है? इस पर इंतिज़ामीया ने बताया कि जमाअत के अपने पार्किंग के अहाता में है और महफ़ूज़ है और यहां सैक्योरिटी मौजूद है।

जमाअत बेल्जियम ने यहां मिशन के बाहरी अहाता में स्थायी रूप से एक स्टेज बनाया हुआ है। चारों तरफ़ से ईंटों की पक्की दीवार बनाकर बीच में मिट्टी डाली हुई है। हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया कि स्टेज को स्थायी तौर पर बनाया हुआ है तो फिर उसको पक्का कर लें। इस मौक़ा पर मुरब्बियान भी मौजूद थे । हुज़ूर अनवर ने मुरब्बियान को नसीहत फ़रमाई कि नियमित व्यायाम क्या करें ताकि चुस्ती के साथ अपने कर्तव्यों को अदा कर सकें।

इस के बाद सवा आठ बजे हुज़ूर अनवर ने मार्की में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

13 सितंबर 2018(दिनांक जुमेरात)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह छ: बजे मार्की मैं तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई । नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी उमूर के कामों को पूरा करने में मस्रूफ़ियत रही और हुज़ूर अनवर ने विभिन्न देशों से प्राप्त होने वाली डाक , ख़ुत और रिपोर्टस देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

फ़ैमिली मुलाक़ात

दो बजे हुज़ूर अनवर अदा अल्लाह तआला ने मार्की मैं तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर दफ़्तरी कामों को अदा करने में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के अनुसार छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 62 फ़ैमिलीज़ के 202 लोगों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ शरफ़ मुलाक़ात पाया। इन सभी फ़ैमिलीज़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया ।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ ब्रसल्ज़ शहर के इलावा बैल्जियम की

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553

Weekly **BADAR** Qadian

Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA

POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 16 May 2019 Issue No. 20

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

जमाअतों अनटोरपन , एवपन , लीवर , हासाईट , ओसटनडे और लटरन हाओट से आई थीं। हुज़ूर अनवर ने शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज मुलाक़ात करने वाली फ़ैमिलीज़ में से बड़ी संख्या उन लोगों की थी जो पाकिस्तान से यहां आकर आबाद हुए है। और अपनी ज़िन्दगी में पहली बार अपने प्यारे आक़ा से मिल रहे थे। ये सभी बहुत ख़ुश थे कि उनकी ज़िन्दगियों में आज एक ऐसा दिन आया है कि उन्हें अपने प्यारे आक़ा का बहुत अधिक क़रीब से दीदार नसीब हुआ और उन्होंने अपने आक़ा के क़ुरब में जो कुछ क्षण गुज़ारे वे उनकी सारी ज़िन्दगी का सरमाया थे। उनमें से हर एक बरकतें समेटते हुए बाहर आया और उनकी तकलीफ़ राहत तथा सुकून में बदल गईं।

एक दोस्त जब अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात करके दफ़्तर से बाहर निकले तो कहने लगे कि आज अपनी ज़िन्दगी में पहली बार किसी भी ख़लीफ़ा वक़्त से मल्लाहों । वो मुसलसल रो रहे थे और उनका जिस्म काँप रहा था कहने लगे कि कम अज़ कम हर इन्सान को ज़िन्दगी में एक बार ख़लीफ़ा से ज़रूर मिल लेना चाहिए ताकि एक बार तो इन्सान पाक हो जाए और फिर नई ज़िन्दगी शुरू करे।

एक नौजवान ख़ादिम ने निवेदन किया कि मुलाक़ात में मेरे साथ मेरी अम्मी और भाई थे। हुज़ूर अनवर से मेरी ज़िन्दगी में यह पहली मुलाक़ात थी। मेरे लिए तो ऐसा था कि जैसे में एक दुनिया से दूसरी दुनिया में जा रहा हूँ। कमरे में दाख़िल होने से पहले घबराहट थी। मैंने दुरूद शरीफ़ पढ़ना शुरू कर दिया। ख़ुदा तआला ने हिम्मत दी। हुज़ूर से मिलना एक बड़ी हिम्मत की बात है। कामयाबी का सरचश्मा ख़िलाफ़त ही है और अगर हमने अपनी नस्लों को कामयाब करना है तो हमें अपनी नस्लों को ख़िलाफ़त से मुंसलिक करना होगा।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम सवा आठ बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मार्की में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए।

14 सितंबर 2018 (दिनांक जुम्अतुल मुबारक)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह छ: बजे मार्की मैं तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। सुब्ह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक देखी फ़रमाई और विभिन्न प्रकार के दफ़्तरी कामों को पूरा करने में व्यस्त रहे। आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमिदया बेल्जियम के पच्चीसवें जलसा सालाना का आरम्भ हो रहा था और जलसा सालाना का पहला दिन था।

जमाअत बेल्जियम ने इस साल अपने जलसा के लिए अपने मर्कज़ी मिशन हाऊस दलबीक के नज़दीक स्थित दो बड़े हाल हासिल किए थे। ये हाल ब्रसल्ज़ के काफ़ी मशहूर हाल हैं और इस जगह का नाम BRUSSELS KART EXPO है। मिशन हाऊस से यहां का दूरी दो से अढ़ाई किलोमीटर है।

एक हाल का क्षेत्रफल 4800 वर्ग मीटर है। जहां मर्दाना जलसा गाह तैयार की गई है और साथ एक हिस्सा खाना खाने के लिए मुहय्या किया गया है और एक हिस्सा को अलग कर के इस में रिहायश का प्रबन्ध भी किया गया है।

दूसरे हाल का क्षेत्रफल 3000 वर्ग मीटर है जो लजना को दिया गया है और इस में लजना ने अपने विभिन्न प्रबन्ध किए हुए थे। यहां किचन की सुविधा भी मौजूद है और दफ़्तरों के लिए भी अलग कमरे उपलब्ध हैं। यहां दो हज़ार से अधिक गाड़ीयों की पार्किंग का प्रबन्ध मौजूद है। चूँकि ये बहुत मशहूर और बड़े हाल हैं इसलिए इन दोनों हालों के साथ वाश रूमज़ बड़ी संख्या में मौजूद है। यहां ट्रांसपोर्ट की सुविधा भी उपलब्ध है। बस स्टॉप हाल के फ्रंट पर स्थित है। क़स्बा का रेलवे स्टेशन हाल के पिछली तरफ स्थित है और लोकल ट्राम स्टप 300 मीटर की दूरी पर स्थित है।

जलसा सालाना बेल्जियम -पहला दिन जुम्अ:

प्रोग्राम के अनुसार दोपहर एक बज कर पच्चास मिनट पर हुज़ूर अनवर अपनी

पृष्ठ 1 का शेष

पूंजी ले आए। जब रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि घर में क्या छोड़ आए? तो फ़रमाया कि ख़ुदा और रसूल को घर में छोड़ आया हूँ। रईस मक्का हो और कम्बल पोश हो,गरीबों का लिबास पहने। अत: समझ लो कि वे लोग तो ख़ुदा की राह में शहीद हो गए। उनके लिए तो यही लिखा है कि तलवारों के नीचे बहिश्त है लेकिन हमारे लिए तो इतनी सख़्ती नहीं ,क्योंकि "यज़उल-हर्ब" हमारे लिए आया है अर्थात महदी के वक़्त लड़ाई ना होगी।

जिहाद की हक़ीक़त

अल्लाह तआला कुछ मसलहतों की दृष्टि से एक काम करता है और भविष्य में जब वह काम एतराज़ योग्य ठहरता है तो फिर वह कार्य नहीं करता। पहले हमारे रसूल अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई तलवार ना उठाई मगर उनको सख़्त से सख़्त तकलीफ़ें बर्दाश्त करनी पढ़ीं। तेरह साल का समय एक बच्चा को बालिग़ करने के लिए काफ़ी है और मसीह अलैहस्सिलाम की सीमा तो अगर इस सीमा में से दस निकाल दें। तो भी काफ़ी होती है। अत: इस लंबे अर्सा में कोई या किसी रंग की तकलीफ़ ना थी जो उठानी ना पड़ी। अन्त में वतन से निकले तो पीछा हुआ दूसरी जगह पनाह ली तो दुश्मन ने वहां भी ना छोड़ा। जब ये हालत हुई तो मज़लूमों को ज़ालिमों के ज़ुलम से बचाने के लिए हुक्म हुआ

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ۝ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ

(अलहज्ज :40,41) जिन लोगों के साथ लड़ाइयां जानबूझ कर की गईं और घरों से बिना किसी कारण निकाले गए सिर्फ इसलिए कि उन्होंने कहा कि हमारा रब अल्लाह है। अत: यह ज़रूरत थी कि तलवार उठाई गई। वरना अल्लाह की कसम हज़रत कभी तलवार ना उठाते। हाँ हमारे ज़माना में हमारे इस के ख़िलाफ़ क़लम उठाई गई , क़लम से हम को तकलीफ दी गई और सख़्त सताया गया, उनके मुक़ाबला पर क़लम ही हमारा हथियार भी है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 36 से 38 प्रकाशन कादियान 2018 ई)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और जलसा के लिए रवानगी हुई। लगभग सात मिनट के सफ़र के बाद जलसा गाह आमद हुई । जलसा गाह के बाहरी एरिया में झण्डा लहराने का आयोजन हुआ। हुज़ूर अनवर ने लिवाए अहमदियत लहराया जब कि अमीर साहिब बेल्जियम ने बैल्जियम का क़ौमी झण्डा लहराया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने दुआ करवाई ।

म. टी. ए इंटरनेशनल की यहां जलसा गाह से लाईव प्रोग्राम शुरू हो चुके थे। झण्डा लहराने की यह आयोजन भी दुनिया-भर में लाईव प्रसारित हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ लाए और ख़ुत्बा जुमा इरशाद फ़रमाया जिसके साथ जलसा का उद्घाटन हुआ। हुज़ूर अनवर का यह ख़ुत्बा जुमा अख़बार बदर में प्रकाशित हो चुका है। हुज़ूर अनवर का यह ख़ुत्बा जुमा 3 बजे तक जारी रहा। यह ख़ुत्बा ऐम. टी. ए इंटरनेशनल पर लाईव प्रसारित हुआ।

ख़ुत्बा जुमा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़े जुमा के साथ नमाज़ अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए। पिछले-पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी कामों को पूरा करने में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के अनुसार सात बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिली मुलाक़ातें शुरू हुईं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad